भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 5 **सितम्बर** 2004 **अंक** 9

शिक्षा का विघटनकारी स्वरूप

आज देश में शिक्षा का एक स्वरूप नहीं जो राष्ट्र की चेतना को स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त कर सके। सभी राज्यों की अपनी-अपनी शिक्षा नीतियाँ हैं। ये शिक्षा नीतियाँ राजनीतिप्रधान यानी वोटप्रधान हैं। उत्तरप्रदेश में अल्पसंख्यक मतदाताओं को लुभाने के लिए रामपुर में उर्दू, अरबी और फारसी भाषाओं का मौलाना मुहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय स्थापित करने की जी-जान से कोशिश हो रही है। अल्पसंख्यक वर्ग को, जो मुख्यमंत्री के प्रमुख सहयोगी हैं, इसका दायित्व सौंपकर उत्तर प्रदेश में एक वर्गविशेष का वोटबैंक मजबूत करने का प्रयास है।

बिहार में चरवाहा विद्यालय की योजना तत्कालीन मुख्यमंत्री लालूप्रसाद यादव ने शुरू की थी। वह समाप्तप्राय थी। उसे पुनर्जीवित कर आगामी चुनाव में वर्गविशेष के मतदाताओं को लुभाने का प्रयास है। ऐसे अनेक प्रयास अन्य राज्यों में भी हो रहे हैं। शिक्षा आज राष्ट्रीयता तथा नैतिकता का माध्यम न होकर अवसरवादिता का साधन बन गयी है। लगता है, उत्तर प्रदेश को मुलायमस्तान और बिहार को लालूस्तान बनने को देर न लगेगी।

''अंग्रेजी सीखो, आगे बढ़ो, कम्प्यूटर सीखो, कामयाब हो जाओ। कुँए में मेढ़क मत बनो, बल्कि विस्तृत संसार में सेवायोजन-अवसरों के महासागर में तैरो। पूरी दुनिया में तकनीकी व्यावसायिक और उच्चशिक्षा के क्षेत्र में बेशुमार अवसर उत्पन्न हो रहे हैं, ऐसे में युवाओं को हिन्दी के साथ अंग्रेजी सीखनी होगी और कम्प्यूटर में भी दक्षता हासिल करनी होगी।''

— टी०वी० राजेश्वर
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

❑ ❑ ❑

''देश की भाषा और संस्कृति पर हमले जारी हैं। भाषा का सवाल देश की अस्मिता, स्वाभिमान और सम्मान से जुड़ा है। इसके साथ कोई समझौता नहीं किया जा सकता। हिन्दी का गौरव बढ़ाए बगैर हम अपने समाज और देश का भला नहीं कर सकते। देश की भाषा और संस्कृति पर लगातार हमले हो रहे हैं, इसके पीछे अन्तर्राष्ट्रीय साजिश है। इससे सावधान रहने की जरूरत है।''

— मुलायम सिंह, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
(अवसर 15 अगस्त 2004, स्वतंत्रता दिवस)

इतिहास का धर्मयुद्ध

मार्क्सवादियों की इतिहास-दृष्टि कार्ल मार्क्स से प्रभावित है। कार्ल मार्क्स के अनुसार—''भारतीय समाज का कोई इतिहास नहीं है, कम से कम ज्ञात इतिहास तो बिल्कुल ही नहीं है, जिसे हम उसका इतिहास कहते हैं, वह वास्तव में उन आक्रमणकारियों का इतिहास है जिन्होंने आकर उस समाज के निष्क्रिय आधार पर अपने साम्राज्य कायम किये थे, जो न विरोध करता था, न कभी बदलता था।''

इसी इतिहास-दृष्टि से प्रभावित वामपंथी इतिहासकार भारत के इतिहास को अपनी प्रस्तुति करते हैं। अब मानव संसाधन मंत्री अर्जुन सिंहजी ने अभिनव उद्घोषणा की है ''भारत एक राष्ट्र के राज्य के रूप में सन् 1942 के करो या मरो आन्दोलन से ही अस्तित्व में आया।'' माननीय मंत्रीजी यह बतायें कि 5 वर्ष बाद 1947 में भारत दो राष्ट्र कैसे हो गया? यह भारत राष्ट्र का कितना बड़ा अपमान है। हाल में मार्क्सवादी इतिहासकार रोमिला थापर की 'सोमनाथ' पर पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें उन्होंने सोमनाथ मन्दिर को अनेक बार लूटने वाले महमूद गज़नी को महिमामंडित किया है। उसी परम्परा में आज बाहुबली सांसद व नेता महिमामंडित किये जा रहे हैं। जबकि सोमनाथ मन्दिर की इतनी प्रतिष्ठा थी कि परिवारजन अपने पुत्रों का नाम सोमनाथ रखते थे। आज हमारे संसद (लोकसभा) के अध्यक्ष माननीय सोमनाथ चटर्जी हैं जो स्वयं वामपंथी हैं। अब तो चीन चंगेज खाँ को भी बुद्धिजीवी साबित कर रहा है।

कार्ल मार्क्स के अनुसार भारत के इतिहास में चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, हर्षवर्द्धन से लेकर बाबर, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ उल्लेखनीय नहीं हैं। उनके अनुसार भारत का कोई सामाजिक इतिहास नहीं है, भारतीय स्वर्णयुग मिथक है, अँग्रेज अपनी श्रेष्ठकर सभ्यता के कारण विजयी हुए।

भारत के वामपंथी इतिहासकार कार्ल मार्क्स के इतिहास की उसी अवधारणा के सन्दर्भ में पश्चिमी देशों के राजनीतिक चिन्तन और दर्शन से भारत के इतिहास को खण्डित कर अपने मतवाद को जन-जीवन में लादना चाहते हैं। दूसरी ओर भारतीय इतिहासकार, जिन्हें भगवा इतिहासकार कहा जाता है भारतीय इतिहास को सांस्कृतिक चेतना से संपृक्त करना चाहते हैं।

दिल्ली सरकार द्वारा सद्यः प्रकाशित और मार्क्सवादियों द्वारा लिखित इतिहास पुस्तक में कहा गया है—सभी दलों ने भारत का विभाजन किया था। भारत का विभाजन न हो, इसके लिए महात्मा गाँधी और कांग्रेस ने कितना प्रयास किया था, किन्तु उन्हें अंग्रेजों की विभाजन-दुर्नीति के सामने समर्पित होना पड़ा। राजनीति-प्रभावित इतिहास द्वारा क्या कांग्रेस वामपंथियों के समक्ष समर्पित नहीं हो रही है? भगवा और लाल कभी एक नहीं हो सकते। भगवा सेवा, उत्सर्ग, त्याग और सहयोग का रंग है, लाल रक्त का पर्याय है। दोनों का धर्मयुद्ध जारी है।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

जन्म शताब्दी

वाराणसी, 9 अक्टूबर 1959, ग्राम लमही, प्रेमचंद की जन्मस्थली, अवसर जन्मशताब्दी, आयोजक नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद द्वारा प्रेमचंद स्मारक का शिलान्यास। अध्यक्षता : बँगला साहित्यकार ताराशंकर वन्द्योपाध्याय, समारोह का उद्घाटन मुख्यमंत्री डॉ० सम्पूर्णानन्द, प्रमुख उपस्थिति : उत्तर प्रदेश के राज्यपाल वी०वी० गिरि, सभा के उप सभापति पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी, शिक्षामन्त्री पं० कलापति त्रिपाठी, प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, किशोरीदास वाजपेयी, डॉ० गोरखप्रसाद, भगवतशरण उपाध्याय, रायकृष्णदास, प्रेमचंदजी के भाई महताब राय, पुत्र अमृतराय।

प्रेमचंद की 126वीं जयन्ती

वाराणसी, 31 जुलाई 2004 प्रेमचंद जयंती लहुराबीर चौराहे पर स्थित प्रेमचंद की मूर्ति को 4 गेंदे और 1 गुलाब माला के अर्पण से प्रारम्भ हुई। काफिला आगे बढ़ा—पाण्डेयपुर चौराहे पर स्थित प्रेमचंद की मूर्ति को माल्यार्पण कर साहित्यकारों का समूह आगे बढ़ा, पहुँच गया प्रेमचंद के गाँव लमही, जो अब गाँव नहीं वाराणसी का उपनगर है। दलित साहित्य अकादमी द्वारा 'रंगभूमि' को लेकर विवाद खड़ा करने से साहित्यकार, समाजसेवी, राजनीतिकार सभी प्रेमचंद के 126वें जन्मदिवस पर प्रेमचंद की जय-जयकार करने लमही पहुँच गये। लमही के लोग प्रेमचंद की रचनाओं के पात्रों को याद कर बताते हैं कि उनके पात्र उनके ही बीच से कौन-कौन थे।

नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा रस्म अदायगी शुरू हुई और प्रेमचंद की वहाँ 1959 में स्थापित मूर्ति को माला पहनाकर साहित्य सेवा का प्रमाण-पत्र प्राप्त किया।

अब साहित्यकारों की जमात की बारी थी—डॉ० शुकदेव सिंह, कमल गुप्त, न्यायमूर्ति गणेशदत्त दुबे, पं० श्रीकृष्ण तिवारी, डॉ० रमाशंकर शुक्ल, हिमांशु उपाध्याय, बृजबाला सिंह, व्योमेश शुक्ल, धीरेन्द्रनाथ सिंह जितेन्द्रनाथ मिश्र आदि ने प्रेमचंद को याद किया। बिरहा गायक हीरालाल यादव पार्टी ने लोकवाणी में प्रेमचंद को याद किया—''रहल भारी बदनसीबी, देखें नियर से गरीबी। दलित गरीबन के रचना में हिन्दुस्तान बा।''

रंगकर्मियों ने प्रेमचंद के पात्रों को जीवंतता प्रदान की। 'सवा सेर गेहूँ', 'लाटरी', 'अलग्योझा' का नाट्याभिनय और नौटंकी प्रस्तुत की गयी। 'बालरंग मंडल' ने 'बँटवारा' का अभिनय किया और शहरी साहित्यकारों, दर्शकों, कलाकारों ने देखा—प्रेमचंद के घर के भग्नावशेष को—जिस कमरे में बैठकर प्रेमचंद ने 'गोदान' लिखा उसकी पूरी छत ढह गई, 'गबन' वाले कमरे में बड़ा सा सुराख हो गया। लोगों ने आह भरते हुए संतोष किया—चलो प्रेमचंद के 'गोदान' और 'गबन' तो सुरक्षित हैं।

केन्द्र सरकार ने घोषित किया था—प्रेमचंद के निवास और गाँव को राष्ट्रीय स्मारक बनायेंगे। ऐसी घोषणाएँ प्रदेश सरकार कितनी बार कर चुकी। कागजी योजनाएँ बनती रहीं, फाइलें दौड़ती रहीं, देखिए राजनीतिक सत्ता की चिन्ता से पीड़ित सरकार कब प्रेमचंद को वास्तविक रूप में याद करती है, वह प्रेमचंद जो गरीबों का, असहायों का, दलितों का मसीहा था जो जिन्दगीभर अपने पात्रों के माध्यम से महाजनी सभ्यता से लड़ता रहा और एक दिन वह स्वयं भी महाजनी सभ्यता का शिकार हुआ और जी जान से पाले पोसे 'हंस' को कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी को सौंपना पड़ा।

बकौल प्रेमचंद—''मेरा जीवन एक सपाट, समतल मैदान है...साधारण आदमी ऐसा जो आँखें खोल अपने आस-पास की दुनिया को देखता है और उसी सपाट, समतल, बेलौस अंदाज में उसका कच्चा-चिट्ठा खोल के रख देता है। यूँ करना-यूँ करते रहना-ही है असल स्मारक। बाकी तो बस ईंट गारा है।''

नई दिल्ली 31 जुलाई 2004 राजेन्द्र यादव सभागार प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती, भारतीयता की अवधारणा पर गोष्ठी और 'हंस' के दलित विशेषांक का लोकार्पण। उधर जन्तर मन्तर पर दलित साहित्य अकादमी के लोग प्रेमचंद के 'रंगभूमि' की प्रतियाँ जला रहे थे। (लगता था 'रंगभूमि' का पात्र गा रहा है—''भैरो भैरो ताड़ी बेच, या बीवी की साड़ी बेच'')

राजेन्द्र यादव ने 'रंगभूमि' जलाये जाने की दुर्घटना को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए इसकी भर्त्सना की। एक और दुर्घटना हुई कि इस वर्ष प्रेमचंद कथा-प्रतियोगिता में कोई स्तरीय कहानी नहीं आई अत: इस बार सम्मान न देने की घोषणा हुई। श्रोताओं को लगा कि जैसे प्रेमचंद की व्यंग्यपूर्ण मुस्कान ध्वनित हो रही है।

'हंस' के दलित विशेषांक का लोकार्पण करते हुए कहानीकार **ओमप्रकाश** ने कहा, ''जिन लोगों ने 'रंगभूमि' को जलाया है, वे पहले अपनी जाति का प्रमाण-पत्र जलायें। 'रामचरितमानस' को जलायें। प्रेमचंद जैसा साहित्यकार आज नहीं हो सकता।''

राजेन्द्र यादव ने 'भारतीयता की अवधारणा' पर विषय प्रवर्तन किया। **प्रो० इम्तियाज** का कहना था—''इस देश में भारतीयता वस्तुत: महसूस करने की चीज़ है, परिभाषित करने की नहीं।'' शेषाद्रिचारी के अनुसार भारतीयता वह है जो प्रत्येक जनमानस में निहित है। **प्रो० आनन्दकुमार** ने कहा—भारतीयता एक प्रकार की राष्ट्रीयता है। हम एक साथ समूह में और अकेले रहना चाहते हैं। **अरुणा राय** के अनुसार—मनुष्यता ही भारतीयता है।

दलित साहित्य अकादमी

डॉ० सुमनाशर के अनुसार दलित साहित्य अकादमी के अपने गठन के बाद इस तरह के साहित्य की खोज कर रही है जिसमें दलितों के प्रति अपमानजनक शब्द इस्तेमाल किये गये हैं। हरियाणा के राज्यपाल से कहकर महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम से निराला की एक कविता हटवाई थी, यह उनका पहला पड़ाव था, दूसरा पड़ाव 'रंगभूमि' है। साहित्यकार **मुद्राराक्षस** की मुद्रा है—अगर प्रेमचंद सरीखे बड़े और सर्वमान्य लेखक अपनी रचनाओं में कहीं किसी समुदाय या समाज के बाबत कुछ आपत्तिजनक बातें लिखते हैं तो ऐसी बातों को न केवल रेखांकित किया जाना चाहिए बल्कि जनतांत्रिक ढंग से उसका विरोध भी करना चाहिए।

सवा सेर गेहूँ का साहूकार और आज की सरकार-साहूकार

प्रेमचंद के सवा सेर गेहूँ का शंकर विप्र महाजन की गुलामी करते-करते मर गया, उसका बेटा भी उसी गति को प्राप्त हुआ। प्रेमचंद ने कहानी के अंत में लिखा था—''पाठक, इस वृत्तांत को कपोल कल्पित न समझिए। यह सत्य घटना है। ऐसे शंकरों और विप्रों से दुनिया खाली नहीं है।'' शंकर के बेटे 74 वर्षीय रामलोचन महतो कहते हैं—''मेरे पिता सवा सेर गेहूँ का कर्ज नहीं उतार पाये और एक ईंट-भट्ठा वाले के यहाँ जिन्दगीभर मजदूरी करते रह गये।''

आज स्थिति बदली नहीं है परिस्थिति बदल गयी है, अब सरकार महाजन है; आज सरकारी महाजन किसानों से किस प्रकार कर्जा वसूलते हैं—''तहसीलों की वसूली का ग्राम तो 'कलेक्शन चार्ज' के सहारे बढ़ता जाता है लेकिन बकायेदार का मूल जस का तस ही रह जाता है। साथ में ब्याज भी। नीलामी से मिली रकम कलेक्शन चार्ज को अदा करने में ही चुकता हो जाती है। यही वजह है कि मूल का तिगुना-चौगुना चुकाने के बाद भी कर्जदार का कर्जा हमेशा उस पर पहले से कहीं अधिक बाकी रहता है। कर्ज वसूली के लिये सरकारी तौर पर लिये जाने वाले कलेक्शन चार्ज के जाल में उलझा किसान ताउम्र कर्जे से मुक्ति नहीं पा पाता है।''

❑ ❑ ❑

प्रेमचंद की किताब जलाने वाले बहुत ज्यादा पेट भरे और बहुत ज्यादा वैभव में रहने वाले लोग हैं। आर्थिक उन्नति करने के बाद अब उन्हें अस्मिता का बोध हो रहा है। उन्हें पता नहीं कि जिनके पेट में रोटी नहीं, तन पर कपड़ा नहीं और सिर पर छत नहीं, उनके लिए इस अस्मिता का क्या अर्थ है ? वास्तव में दलित जातियों के पढ़े-लिखे और खाते-पीते वर्ग को इस देश का पूँजीवाद उस ब्राह्मणवाद की लड़ाई में उलझा कर रखना चाहता है, जिसका कोई वजूद नहीं है। अगर दलित नेतृत्व गलत जगह उलझा रहेगा, तो पूँजीवाद के खिलाफ दलित उभार भी कमजोर रहेगा।

लड़ना ही है, तो प्रेमचंद के लिखे हुए से क्यों, समाज की कमियों लड़ना चाहिए। प्रेमचंद के खिलाफ आक्रोश व्यक्त करने वाले दलित साहित्य अकादमी के नेताओं को मेरी सलाह है कि वे साहित्य पढ़ने की आदत डालें। साहित्य न पढ़ने के कारण ही वे भटक रहे हैं, उन्हें दिशा नहीं मिल रही है। अगर वे साहित्य पढ़ेंगे, तो साहित्य उन्हें ऊर्जा भी देगा और मार्गदर्शन भी। वे प्रेमचंद को ठीक तरह से पढ़कर ही समझ सकेंगे कि हिन्दी साहित्य में वह पहले लेखक हैं, जिनसे दलित विमर्श की शुरुआत होती है।

— दलित साहित्यकार कँवल भारती

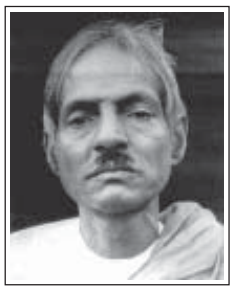

रविवार, 1 अगस्त 2004 को गंगातट पर स्थित ज्ञान-प्रवाह में आचार्य वासुदेवशरण अग्रवाल की जन्म शताब्दी के अवसर पर 'सुकृति' नामक गोष्ठी का आयोजन हुआ। इस अवसर पर भारतीय संस्कृति तथा कला विदुषी कपिला वात्स्यायन ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा—गुरु वन्दना का प्रथम चरण समर्पण होता है। इसके बाद अनुसरण तथा प्रश्न होता है। अगर ये सोपान नहीं होते तो हमारे बीच बहुत सारे लोग नहीं होते। ज्ञान का प्रवाह भी गंगा के समान हमेशा बना रहना चाहिए। चाहे सूखा पड़े या बाढ़ आए गंगा अविरल बहती रहती है।

डॉ० अग्रवाल भारतीय संस्कृति, कला, इतिहास, संस्कृत और वेद विद्या के मूर्धन्य विद्वान थे। विद्वान के साथ-साथ वे महात्मा भी थे। वे पत्थरों के अन्दर छुपे रहस्य की गहराइयों में उतरे। उन्होंने शब्दों की दुनिया से इतर अपने को अध्यात्म की दुनिया में भी स्थापित किया। उन्होंने अतिसामान्य चीजों को भी शब्दों और चिन्तन के माध्यम से अतिविशिष्ट बना दिया। आचार्यजी एक महत्त्वपूर्ण समय में अवतरित हुए और अपने को वैदिक ऋचाओं की गहराइयों में उतारा।

उन्होंने विद्वता के प्रत्येक क्षेत्र में अर्थ सौन्दर्य और शब्द सौन्दर्य को स्थापित किया। जहाँ पर अर्थ और शब्द सौन्दर्य की पूर्णता होती है वहीं पर कला की पूर्ण अभिव्यक्ति होती है। इस कारण आचार्य ने कला की पूर्ण अभिव्यक्ति को अपने शब्दों के माध्यम से स्थापित किया।

इस अवसर पर डॉ० अग्रवाल की 50 पुस्तकों की प्रदर्शनी लगायी गई। प्रदर्शनी का उद्घाटन कलाविद् राय आनन्दकृष्ण ने किया। सभी का विचार था कि डॉ० अग्रवाल की कला-संस्कृति विषयक रचनाओं को ग्रन्थावली के रूप में प्रकाशित किया जाय।

गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ० भानुशंकर मेहता ने की। डॉ० अग्रवाल के शिष्य डॉ० नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी ने गोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। 'ज्ञान-प्रवाह' के मानद निदेशक प्रो० आर०सी० शर्मा ने गोष्ठी का संचालन किया।

उनकी वह आत्मचिन्तन की मुद्रा

'भारतीय वाङ्मय' के अगस्त अंक में बहुत कुछ है पढ़ने और मनन करने के लिए—विशेषकर डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल पर तुम्हारा लेख पढ़कर तो वह मुझे और स्वयं वे मेरे मानसपटल पर ऐसे उभरे जैसे मैं एक बार फिर युग को जी रहा हूँ। उनसे मेरा काफी सम्बन्ध रहा। दिल्ली जब भी आते तो खूब सत्संग होता। उनकी वह आत्मचिन्तन की मुद्रा भुलाये नहीं भूलती। श्रद्धेय मैथिलीश्रण गुप्त जब राज्यसभा के सदस्य थे तो अक्सर उनके यहाँ मिल जाते मैं जिस 'शनिवार समाज' का संयोजक था उसमें भी मिल लेते। कुछ दिन वे मेरे पड़ोसी भी रहे। मेरे आग्रह पर सस्ता साहित्य मण्डल के लिये प्रौढ़ शिक्षा के लिये एक छोटी-सी पुस्तक भी लिखी थी। प्राचीन साहित्य को लेकर उन्होंने कई बार मेरी शंकाओं का सहज भाव से निराकरण किया।

— *92 वर्षीय साहित्यकार* **विष्णु प्रभाकर**

कथन

संस्कृत कविता में आज शिखरमयी आदि परम्परागत छंदों के साथ-साथ हाइकू, सीजू आदि आधुनिक छन्दों का भी समावेश हो रहा है तथा नयी काव्य विधाओं को भी अपनाया जा रहा है। आज का संस्कृत कवि समाज के प्रति अत्यन्त सजग है। इसका प्रबल प्रमाण है कि आज किसी विशेष घटना के घटित होते ही संस्कृत में उस पर तत्काल कोई न कोई रचना प्रकाशित हो जाती है। संस्कृत कविता के इस बदलते परिवेश में नये छन्दों और विधाओं पर आधारित एक नये काव्यशास्त्र के निर्माण की आवश्यकता, अनुभव की जा रही है। **—डॉ० राजेन्द्र मिश्र,** कुलपति
वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय

काल व कला : अविभाज्य

काल, कला की परीक्षा करता है। वैसे भी काल व कला का अविभाज्य सम्बन्ध है पर दोनों एक-दूसरे के क्षेत्र का अतिक्रमण करते रहते हैं, पर यह अतिक्रमण ही मनुष्य की संस्कृति का विधाता होता है। रचना की सिर्फ एक ही कसौटी होती है और वह यह कि अमुक रचना में रचनाकार स्वयं को कितना शामिल करता है या कि रचनाकार उस रचना से कितना जुड़ाव अनुभव करता है। वस्तुत: रचनाकार सम्बन्धों को बार-बार जोड़ता, तोड़ता तराशता रहता है, बाद में तराशा या परिमार्जित अनुभव ही रचना का हिस्सा बनता है। किसी विशेष प्रकार की भाषा का प्रयोग कर उस रचना के साथ न्याय नहीं किया जा सकता।

—विद्यानिवास मिश्र

विषमतामूलक राज-समाज में सभी पिछड़े वर्गों को असली स्वतंत्रता और समता दिलाने के लिए चारों ओर जो बदलाव चाहिए, उनको लाने का सबसे ताकतवर माध्यम साहित्य ही है, और यह भी सही है कि कई बार परम्परा के निषेध के लिए पुरानी साहित्यिक भाषा का संहार भी जरूरी हो जाता है। लेकिन इस संदर्भ में याद रखने योग्य है कि भाषा का संहार और भाषा का भोंडा बेहूदा प्रयोग दो अलग-अलग बातें हैं। कथित तौर से स्त्रियों-दलितों की स्वतंत्रता के पक्ष में और मनुवादी पुरुषपोषित समाज के खिलाफ लिखा जा रहा हमारा ज्यादातर हिन्दी साहित्य आज वस्तुत: इन समूहों से सामाजिक अपरिचय और उनके निषेध का एक सीमित वर्ग द्वारा पढ़ा जा रहा साहित्य है। तमाम स्त्री-दलित विमर्श विशेषांकों के बावजूद, हिन्दी में आज स्त्रियों और दलितों के प्रति स्निग्ध सहज आत्मीयता का परिचय देने वाले ऐसे लोकप्रिय लेखन का गहरा अभाव है जो समाज में नया सोच लाए! सच्ची स्त्री-स्वतंत्रता और दलित चेतना का समाज और साहित्य में क्यों अभाव है? इन दोनों सवालों का एक ही उत्तर है। हमारा राज-समाज तथा साहित्य स्वतंत्रता का असली अर्थ इन जमातों तक पहुँचाता हुआ नहीं देखना चाहता, क्योंकि असली क्रान्ति की धूल-धक्कड़ से उसकी हवा खराब होती है। **— मृणाल पांडे**

इतिहास के भगवाकरण का शोर मचाने वालों ने कभी यह नहीं बताया कि भगवाकरण के चलते किया क्या गया है। भारतीय इतिहास कांग्रेस के तत्वावधान में इरफान हबीब की अगुआई में तीन प्रोफेसरों का जो दल बना था, उसने भी अपनी रपट में यह नहीं बताया कि अमुक विवरण भगवाकरण है।

यदि इतिहास ऐसे लोगों के वश में हो तो वे प्राचीन भारत के ऋणात्मक पक्ष पर अधिक बल देंगे और धनात्मक पक्षों की उपेक्षा की जाएगी। पिछली पुस्तकों में ऐसा किया भी गया था। यदि कोई इतिहासकार किसी ऐसी उपलब्धि को जिसके अकाट्य प्रमाण प्राचीन काल में मिलते हों, नकारते हुए इसे मध्यकाल की देन सिद्ध करने के लिए आग्रहशील हों तो इसे इतिहास का इस्लामीकरण कहना उतनाही उचित होगा जितना प्राचीन भारत में महिमामंडन को भगवाकरण कहना। **—भगवान सिंह**

मैथिलीशरण गुप्त का पत्र
पं० माखनलाल चतुर्वेदी के प्रति

जो पीछे आ रहे, उन्हीं का
मैं आगे का जय-जयकार

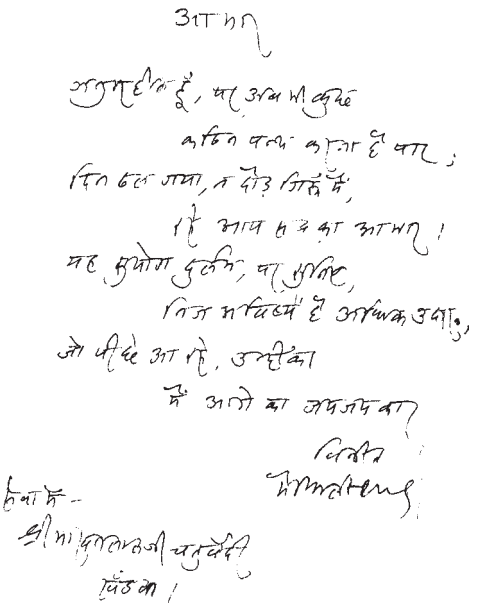

यत्र-तत्र-सर्वत्र

बुलगारिया की राजधानी सोफिया में भारत-शास्त्र सम्मेलन

पूर्वी यूरोप के देश बुल्गारिया की राजधानी सोफिया स्थित 'सोफिया विश्वविद्यालय सेंट क्लीमेंट ओहरीदिस्की' के भारत-शास्त्र विभाग की स्थापना के बीस वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में एक त्रिदिवसीय सम्मेलन दिनांक 30 जून, 2004 से 2 जुलाई, 2004 के बीच सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए बुल्गारिया में भारत के राजदूत श्री दिनकर खुल्लर ने कहा कि भारत और बुल्गारिया के बीच मजबूत सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं। उद्घाटन सत्र में विश्वविद्यालय के वाइस रेक्टर प्रो० अलेक्जेन्डर फेदोतोव और डीन प्रो० तात्याना एवतीमोवा ने भी विचार व्यक्त किये।

इस सम्मेलन में लगभग पचास आलेख पढ़े गये। इन आलेखों के विषय भारतीय संस्कृति, भाषा विज्ञान, साहित्य आदि से सम्बद्ध थे। सम्मेलन में बुल्गारिया के अतिरिक्त भारत और अन्य देशों के विद्वानों ने भी भाग लिया। सम्मेलन के प्रथम दिन प्रो० फेदोतोव ने पूर्वी और केन्द्रीय एशिया में बौद्ध कविता में प्रार्थना का महत्त्व, प्रो० मन्नार वेंकटेश्वर ने समकालीन हिन्दी उपन्यासों में नारीवाद, गेब्रियाला निकोलाएवा ने ऋग्वेद में पुरुष एवं स्त्री का अस्तित्व, बोरियाना कामोवा ने प्राचीन भारत में विभिन्न जातियों की विशेषता और अलेक्जेन्डर फॉल ने प्राचीन बुल्गारियायी संगीत विषय पर आलेख पढ़े।

सम्मेलन के दूसरे दिन डॉ० आनन्दवर्धन शर्मा ने भारतेन्दु और हिन्दी, गिरगाना रुसेवा ने ऋग्वेद की ऋचाएँ, जाना जलास्कोवा ने आधुनिक साहित्यिक हिन्दी में तुर्की शब्द, वान्या गान्चेवा ने हिन्दी अखबारों की भाषा की विशेषता, नादेज्दा रोजोवा ने आधुनिक बुल्गारिया में भारतीय शब्दों का उच्चारण व लेखन, वेलेंतीना मारीनोवा ने आधुनिक हिन्दी की प्रक्रिया और दिशायें, डॉ० मिलेना ब्रातोवा ने वैदिक काल के रीति-रिवाजों में पाक कला का महत्त्व, एलित्सा चाउशेवा ने सआदत हसन मंटो की रचनायें, डॉ० गालिना रुसेवा सोकोलोवा ने वल्लभाचार्य विषय पर आलेख वाचन किया। इसके अतिरिक्त लिलिया देनेवा, इरिना क्यूलानोवा, एलित्सा कोंस्तेंतिनोवा, जुरनित्सा दिमित्रोवा, आसिया च्चेतानोवा, जुरनित्सा रिस्तोवा, आर० स्तोपोव, टी० यालूमोव, एल० चांकोव, एम० मिताफोवा आदि ने भी आलेख वाचन किया।

सम्मेलन के अन्तिम दिन एलिजाबेथ एलेक्जेन्द्रोवा ने मुग़ल वास्तुकला में चारबाग़ का महत्त्व, दानियल निकोलोव ने भारत में ईरानी साहित्यिक परम्परा, मारियो अपेन ने मुग़लों के समय भारत में ईरानी लिपि, प्रो० तात्याना एवतीमोवा ने अमीर ख़ुसरो, तोदोर यालामोरोव ने 1878 से 1944 के बीच बुल्गारियायी साहित्यिक क्षितिज में भारत, मिरेना पातशेवा ने भाषा, मानसिकता और भावुकता - भारत बुल्गारियायी सांस्कृतिक सर्वेक्षण, डॉ० उषा शर्मा ने गढ़वाल क्षेत्र और उसकी संस्कृति, गोआर खानोसियान ने भारत की शिल्पकला, दोन्का अलेक्सान्द्रोवा ने महात्मा गाँधी और अहिंसा, विषय पर आलेख पढ़े। इसके अतिरिक्त स्वेत्लाना गोलोगाचेवा पेनेवा, देसिसलावा पेतकोवा, इवान काम्बुरोव, बोयका सिगोवा, तिओदोरा कुत्सारोवा, वेलेरी लिचेव, एल्का लाजारोवा, एसेन गिनोव, स्तानिस्लावा राशेवा, मोना कौशिक, इवांका व्लाएवा, मित्को मोमोव, दिमित्रिंका स्तोयानोवा, स्वेत्लेना इग्नातोवा, व्लादीमिर बुब्नियाक, एक्तिरिना चिलिकोवा, पावलिना तातारलिएवा आदि ने भी आलेख वाचन किया।

यह सम्मेलन बुल्गारिया स्थित भारत के राजदूतावास के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

— डॉ० उषा शर्मा, सोफिया, बुल्गारिया

अंग्रेजी बनाम हिन्दी माध्यम

दिल्ली विश्वविद्यालय की एम०ए० आनर्स राजनीतिशास्त्र की परीक्षा में प्रश्नपत्र अंग्रेजी के साथ हिन्दी में नहीं पूछे गये, इससे छात्रों ने विरोध व्यक्त किया है उनका कहना है कि अंग्रेजी माध्यम से पढ़नेवाले छात्रों के समक्ष उनकी उपेक्षा की जा रही है, जबकि अधिकारियों का कहना है कि अंग्रेजी एक सर्वमान्य भाषा है अत: अंग्रेजी उनकी विवशता है। हमारा केन्द्रीय विश्वविद्यालय है, हमारे लिए सम्भव नहीं कि विभिन्न भाषा क्षेत्रों से आये छात्रों के लिए उनकी भाषा में व्यवस्था की जाय। फिर भी हम हिन्दीभाषी छात्रों के लिए विशेष कक्षाओं की व्यवस्था करते हैं। विभागाधिकारी का कथन है कि हिन्दी में बहुत से सन्दर्भ-ग्रन्थ नहीं हैं अत: अंग्रेजी का ही सहारा लेना पड़ता है।

कौन हैं महादेवी वर्मा ?

रहीम, कबीर, तुलसीदास की रचनाओं की प्रासंगिकता का उल्लेख करते हुए उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत ने कहा, साहित्यकारों को जनता और उनकी समस्याओं के प्रति संवेदनशील होकर रचना करनी चाहिए ताकि रचनाएँ युगों-युगों तक महत्त्वपूर्ण बनी रहें। रचनाओं में भारत अपने सम्पूर्ण स्वरूप में प्रतिबिम्बित होता रहे, ताकि विश्व के रचनाकारों में उसे प्रतिष्ठापूर्ण स्थान प्राप्त हो।

अवसर था 'लेखिका संघ' द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'प्रतिच्छाया' के लोकार्पण का। उन्होंने कहा—हिन्दी पर अंग्रेजी को महत्त्व देने से हमारा प्राचीन साहित्य, संस्कृति, धर्म तथा शास्त्र प्रभावित होते हैं। यह आवश्यक है कि प्राचीन तथा दुर्लभ पाण्डुलिपियों की रक्षा की जाय। जनसमाज में साहित्य हमेशा ही महत्त्वपूर्ण रहा है। अपने कथन के प्रमाणस्वरूप उन्होंने बताया कि जब वे राजस्थान सरकार में प्रतिपक्ष के नेता थे, समाचारपत्र में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री जगन्नाथ पहाड़िया के सन्दर्भ में प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने कहा था—"**कौन हैं महादेवी वर्मा।**" इसकी ऐसी प्रतिक्रिया हुई कि उन्हें पद से त्याग-पत्र देना पड़ा।

लेखिका संघ की अध्यक्षा सुश्री इंदिरा स्वरूप ने संघ का परिचय देते हुए कहा—संघटन सभी भाषाओं की लेखिकाओं की रचनाओं का राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशन और पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास करेगा।

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार कमलेश्वर ने कहा—रचना में निष्ठा और संवेदना के बिना कोई महत्त्व और अर्थ नहीं है।

कश्मीरी भाषा के लिए देवनागरी लिपि

केन्द्र सरकार कश्मीरी भाषा के लिए देवनागरी लिपि प्रयुक्त करना चाहती है। कश्मीर के विभिन्न सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संगठनों ने इसका विरोध किया है। इसे कश्मीरी भाषा पर प्रहार कहा है। इस सम्बन्ध में प्रधानमंत्री तथा मानवसंसाधन विकास मंत्री को स्मरण-पत्र प्रस्तुत किया गया है।

केन्द्र सरकार ने स्पष्ट किया कि कश्मीरी भाषा पर देवनागरी लिपि थोपे जाने को कोई प्रस्ताव नहीं है। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार के दौरान नवम्बर 2003 में कुछ पक्षों की ओर से यह सुझाव रखा गया था कि कश्मीरी भाषा के लिए घोषित प्रस्तावों में उन लेखकों को भी शामिल किया जाना चाहिए जो देवनागरी लिपि का प्रयोग करते हैं। यह स्वीकार किया गया था लेकिन उस पर आगे कार्रवाई नहीं हुई थी।

भाषा संस्थान का कामकाज

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान की जो अनेक अनियमितताएँ उजागर हुई हैं उनसे यह नहीं प्रतीत होता कि यह संस्थान अपने गठन के उद्देश्यों के अनुरूप कार्य कर पा रहा है। पिछले कई वर्षों से यह संस्थान केवल पुस्तकों की खरीद का काम करने में लगा हुआ है। विडम्बना यह है कि यह कार्य भी सही ढंग से नहीं किया जा रहा है। कुछ वर्ष पहले तो पुस्तक क्रय से जुड़ा एक घोटाला भी सामने आ चुका है भाषा सम्बन्धी योजनाओं के संचालन के उद्देश्य से शुरू किए गए उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के अनेक दायित्व हैं, जिनमें अन्य भाषाओं की उत्तम साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित-संरक्षित रखना भी है। इन दायित्वों के निर्वहन के लिए इस संस्थान को अच्छा-खासा अनुदान भी प्राप्त होता है। बावजूद इसके यह संस्थान केवल पुस्तकों की खरीद और वितरण तक ही सीमित होकर रह गया है।

आखिर कोई भी ऐसा संस्थान किसी भी भाषा के विकास अथवा प्रचार-प्रसार का माध्यम कैसे बन सकता है जो केवल पुस्तकों की खरीद और वितरण का कार्य करने में लगा हुआ हो ? उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान

की यह स्थिति तब है जब स्वयं मुख्यमंत्री इस संस्थान के पदेन अध्यक्ष हैं। यह अजीबोगरीब ही है कि इस संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष का पद 2001 से रिक्त है। ऐसा लगता है कि इस संस्थान की कार्यप्रणाली को कोई देखने-सुनने वाला ही नहीं है। जो भी हो, उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान का अपने उद्देश्यों के अनुरूप कार्य न कर पाना निराशाजनक ही है। ऐसा नहीं है कि केवल उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान ही एकमात्र ऐसा संस्थान है जो अपने दायित्वों का निर्वहन सही ढंग से न कर पा रहा हो, इस तरह के अन्य अनेक संस्थान हैं। अब समय आ गया है कि भाषा, लोक कला, संस्कृति आदि के प्रचार-प्रसार तथा संरक्षण के नाम पर कार्य कर रहे विभिन्न संस्थानों की कार्यप्रणाली की समीक्षा की जाए। इन संस्थानों का येन-केन-प्रकारेण चलते रहना तो एक प्रकार से सार्वजनिक कोष के धन की बर्बादी ही है। —'जागरण से'

भारतेन्दु नाट्य अकादमी की नई अध्यक्ष

उत्तर प्रदेश सरकार ने बहुत दिनों से भारतेन्दु नाट्य अकादमी के रिक्त चल रहे अध्यक्ष पद पर सपा सांसद राजबब्बर की पत्नी रंगकर्मी नादिरा बब्बर को नियुक्त किया है।

डिजिटल लाइब्रेरी

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष अरुण निगावेकर के अनुसार देश के सभी विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय तथा विभाग डिटिजल पद्धति से जोड़ दिये जायेंगे। इससे विश्व के शोधपरक जर्नल तथा पुस्तकें सरलता से सुलभ हो जाँयगी।

राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में कहा कि राष्ट्र के विकास और औद्योगीकरण के लिए ज्ञान जरूरी है। इसके लिए विश्वविद्यालयों को डिजिटल लाइब्रेरी से जोड़ने की जरूरत है।

जौहर विश्वविद्यालय, रामपुर

उत्तर प्रदेश राज्य मंत्रिमण्डल की बैठक में उत्तर प्रदेश मौलाना मुहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय अध्यादेश लाने को मंजूरी दी गई। विधेयक में मो० आजम खाँ को इस विश्वविद्यालय का आजीवन प्रति कुलाधिपति बनाने की व्यवस्था की गई है। अध्यादेश के अनुसार वही सारी व्यवस्था होगी, जो विधेयक में थी। अर्थात आजम खाँ विश्वविद्यालय के आजीवन प्रति कुलाधिपति रहेंगे। आजम खाँ इस समय मौलाना मुहम्मद अली जौहर कल्याणकारी ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं। कुलाधिपति राज्यपाल होगा लेकिन उनकी अनुपस्थिति में प्रति कुलाधिपति विश्वविद्यालय की सभा अधिवेशनों तथा विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता करेगा। प्रति कुलाधिपति को ऐसी अन्य शक्तियाँ भी प्राप्त होंगी जो इस अधिनियम या परिनियमों द्वारा दी जाएँगी।

रामपुर में बनने वाले उर्दू-अरबी-फारसी विश्वविद्यालय में मिस्र के जामिये अजहर विश्वविद्यालय के पैटर्न पर अरबी शिक्षा दी जाएगी। इसमें मेडिकल व इंजीनियरिंग की भी शिक्षा दी जाएगी।

प्रो० रामचन्द्र तिवारी स्वस्थ हो रहे हैं।

इधर प्रो० तिवारी लगभग दो महीने से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका गोरखपुर के श्रीकृष्ण हास्पिटल में इलाज चल रहा था। उन्हें बहुत दिनों से प्रोस्टेट की शिकायत थी। उनके शिष्य, मित्र और शुभचिन्तक उनके स्वास्थ्य को लेकर चिन्तित थे। हमें यह सूचित करते हुए सन्तोष और प्रसन्नता हो रही है कि उनका प्रोस्टेट का आपरेशन सफल रहा है और अब वे घर आकर स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी भवन का उद्घाटन

दक्षिण की प्रमुख हिन्दी सेवा संस्था केरल हिन्दी साहित्य अकादमी विगत 24 वर्षों से हिन्दी के माध्यम से राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकता का संचार करती आ रही है।

रजत जयन्ती के अवसर पर अकादमी के भव्य भवन का निर्माण अकादमी के अध्यक्ष डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर के प्रयास से हुआ। 23 अगस्त 2004 को इस भवन का उद्घाटन महामहिम महाराजा उत्राटम तिरुनाल मार्ताण्डवर्माजी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर के ग्रन्थ 'चित्रकला सम्राट राजा रवि वर्मा' का लोकार्पण श्रीमती अश्वति तिरुनाल गौरि लक्ष्मीबाई तंपुराट्टी ने किया। अकादमी की महामंत्री श्रीमती डॉ० एस० तंकमणी अम्मा ने कृतज्ञता ज्ञापन किया।

23 अगस्त को ही अकादमी का चौबीसवाँ वार्षिकोत्सव एवं एस०बी०टी० पुरस्कार तथा विशिष्ट सम्मान प्रदान किया गया।

स्मृति-शेष

उड़िया कवि राउतराय का निधन

प्रसिद्ध उड़िया कवि और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित सचिदानंद राउतराय का निधन 21 अगस्त, 2004 को कटक में हो गया। वह 89 वर्ष के थे। उन्हें 1986 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

राउतराय का जन्म 13 मई 1916 को उड़ीसा के खुर्दा जिले के मुल्जंग गाँव में हुआ था। स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय होने के कारण दो बार जेल जाना पड़ा। आपकी कविताओं में क्रान्ति का स्वर बहुत तीव्र था।

सम्मान-पुरस्कार

प्रो० नागप्पा को कर्नाटक हिन्दी रत्न व पुरस्कार

कन्नड़ एवं हिन्दी भाषा के 93 वर्षीय विद्वान् **प्रो० नागप्पा** की अपूर्व साधना के लिए कर्नाटक साहित्य समिति ने सम्मान समारोह तथा 'स्वप्नरथ' पुस्तक का लोकार्पण आयोजित किया।

कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने विशिष्ट हिन्दीसेवी की उपाधि कर्नाटक हिन्दी रत्न तथा डॉ० बि० रामसंजीवय्या पुरस्कार समिति का नकद पुरस्कार रु० 25,000/- प्रदान किया।

स्वप्न रथ के लेखक डॉ० द्वारकानाथ कबाडी, हिन्दी अनुवादिका श्रीमती संजीविनी सत्यपाल का आदर करते हुए किताब का लोकार्पण राज्यसभा सदस्य, अकादमी के अध्यक्ष सम्माननीय डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी द्वारा हुआ।

पद्मा सचदेव को पं० भीमसेन विद्यालंकार हिन्दी रत्न सम्मान

श्री पुरुषोत्तम हिन्दी भवन न्यास समिति ने डोंगरी एवं हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका **पद्मा सचदेव** को पं० भीमसेन विद्यालंकार स्मृति हिन्दी रत्न सम्मान से सम्मानित किया है।

हिन्दी भवन, दिल्ली के अध्यक्ष एवं कर्नाटक के राज्यपाल त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी एवं दिल्ली के राज्यपाल बनवारीलाल जोशी ने पद्मा सचदेव को यह सम्मान प्रदान किया। पुरस्कार के रूप में श्रीमती सचदेव को प्रशस्ति-पत्र, एक शॉल व 11 हजार रुपये प्रदान किये गये।

प्रमुख प्रकाशकों की नवीनतम पुस्तकों

यथा कहानी, उपन्यास, कविता, ललित निबन्ध, समीक्षा, पत्रकारिता, स्त्री-विमर्श, जीवनी, संस्मरण, कला, इतिहास, संस्कृति, समाजशास्त्र, दर्शन, संगीत आदि के लिए लिखें या पधारें। तीन हजार वर्ग फुट में शोरूम।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक पुलिस स्टेशन परिसर

वाराणसी-221 001

फोन : (0542) (कार्यालय) 2413741, 2413082, 2311423 • फैक्स : (0542) 2413082

ई० मेल : vvp@vsnl.com • sales@vvpbooks.com • Website : www.vvpbooks.com

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी प्रमुख प्रकाशन

STUDIES IN INDIAN ART
Dr. V.S. Agrawal
Second Edition : 2003
Price : Hard Bound 400.00
ISBN : 81-7124-335-5
No. of Pages : 311
Size : 25 x 19 cm.

प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल
प्रथम संस्करण : 2002
मूल्य : सजिल्द 650.00
सजिल्द 450.00
ISBN : 81-7124-313-4
पृष्ठ : 512 (25 × 18 सेमी०)

प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक
डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव
प्रथम संस्करण : 2002
मूल्य : सजिल्द 200.00
ISBN : 817124-313-4
पृष्ठ : 142
आकार : 22.5 × 14.5 सेमी०

प्राचीन भारत में यक्ष पूजा
डॉ० कमलेश दूबे
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : सजिल्द 250.00
ISBN : 81-7124-366-5
पृष्ठ : 172
आकार : 22.5 × 14.5 सेमी०

शिव की अनुग्रह मूर्तियाँ
डॉ० शान्तिस्वरूप सिन्हा
प्रथम संस्करण :
मूल्य : सजिल्द 250.00
ISBN :
पृष्ठ :
आकार : 22.5 × 14.5 सेमी०

आसन एवं योग मुद्राएँ
डॉ० रविन्द्रप्रताप सिंह
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : सजिल्द 250.00
ISBN : 81-7124-365-7
पृष्ठ : 224
आकार : 22.5 × 14.5 सेमी०

प्राचीन भारतीय पुरातत्त्व, अभिलेख एवं मुद्राएँ
डॉ० नीहारिका
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : सजिल्द 250.00
अजिल्द 150.00
ISBN : 81-7124-388-6
पृष्ठ : 324 (22.5×14.5 सेमी०)

बौद्ध तथा जैन धर्म
डॉ० महेन्द्रनाथ सिंह
द्वितीय संस्करण : 2004
मूल्य : सजिल्द 180.00
ISBN : 81-7124-382-7
पृष्ठ : 284
आकार : 22.5 × 14.5 सेमी०

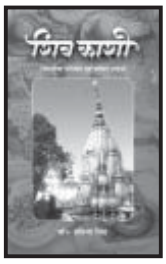

शिव काशी
डॉ० प्रतिभा सिंह
प्रथम संस्करण : 2003
मूल्य : सजिल्द 400.00
ISBN : 81-7124-370-3
पृष्ठ : 300
आकार : 22.5 × 14.5 सेमी०

काशी का इतिहास
डॉ० मोतीचन्द्र
तृतीय संस्करण : 2003
मूल्य : सजिल्द 650.00
ISBN : 81-7124-298-7
पृष्ठ : 448
आकार : 25 × 16 सेमी०

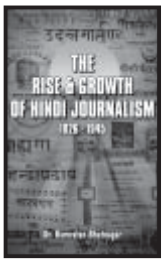

THE RISE & GROWTH OF HINDI JOURNALISM
Dr. Ram Ratan Bhatnagar
Second Edition : 2003
Price : Hard Bound 800.00
ISBN : 81-7124-327-4
No. of Pages : 572
Size : 25 x 19 cm.

लाइ हयात आए
लक्ष्मीधर मालवीय
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : सजिल्द 280.00
ISBN : 81-7124-269-X
पृष्ठ : 214
आकार : 24.5 × 18.8 सेमी०

स्त्रीत्व : धारणाएँ एवं यथार्थ
प्रो० केडिया एवं मिश्र
प्रथम संस्करण : 2003
मूल्य : सजिल्द 180.00
अजिल्द 120.00
ISBN :
पृष्ठ :
आकार : 22.5 × 14.5 सेमी०

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : एक व्यक्तित्व-चित्र
ज्ञानचन्द जैन
प्रथम संस्करण : 2003
मूल्य : सजिल्द 190.00
ISBN : 81-7124-361-4
पृष्ठ : 176
आकार : 22.5 × 14.5 सेमी०

कलागुरु केदार शर्मा : जीवन, कला, साहित्य और संस्मरण
डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : सजिल्द 350.00
ISBN : 81-7124-395-9
पृष्ठ :
आकार : 25 × 19 सेमी०

बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग
बच्चन सिंह
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : अजिल्द 250.00
ISBN : 81-7124-
पृष्ठ : 544
आकार : 22.5 × 14.5 सेमी०

अघोर पंथ और संत कीनाराम
डॉ० सुशीला मिश्र
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : सजिल्द 250.00
ISBN : 81-7124-396-7
पृष्ठ : 224
आकार : 22.5 × 14.5 सेमी०

YOGIRAJADHIRAJ SWAMI VISHUDDHANAND PARAMAHANSADEVA : LIFE & PHILOSOPHY
Nand Lal Gupta
First Edition : 2004
Price : Hard Bound 400.00
ISBN : 81-7124-356-8
No. of Pages : 416
Size : 22.5 x 14.5 cm.

पुस्तकें प्राप्त

सपनों का बाजार
प्रभात पाण्डेय
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : 100 रुपये
प्रकाशक :
प्रतिध्वनि
31, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट
कोलकाता-700 007

भारतीय साहित्य की झलक
(समीक्षा)
डॉ० इन्दरराज बैद
प्रथम संस्करण : 2003
मूल्य : 125 रुपये
प्रकाशक : हिन्दी प्रचार प्रेस
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
चेन्नई - 600 017

अहिंसक समाज रचना
मदनमोहन व्यास
प्रथम संस्करण : 2003
मूल्य : 10 रुपये
प्रकाशक :
अपना राज आन्दोलन
अजन्ता रोड
रतलाम

भावपाँखी (खण्डकाव्य)
बालकृष्ण मिश्र
प्रथम संस्करण : 2002
मूल्य : 120 रुपये
प्रकाशक : संवर्तिका प्रकाशन
एम-1, रायबरेली विकास
प्राधिकरण कालोनी, इन्दिरानगर
रायबरेली-229 001

श्री चित्रकूट रामलीला, काशी : अतीत एवं वर्तमान
डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र
प्रथम संस्करण : 2003
मूल्य : 125 रुपये
प्रकाशक : चित्रकूट रामलीला
समिति, के० 58/100, रामलीला
भवन, बड़ा गणेश, वाराणसी

उज्जयिनी का प्राचीन इतिहास एवं सिंहस्थ का महात्म्य
अनिल गुप्ता 'अनिल'
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : 30 रुपये
प्रकाशक :
महाकाल भ्रमण प्रकाशन
8 कोतवाली रोड, उज्जैन

बनानी
(उपन्यास)
उदयभानु पाण्डेय
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : 195 रुपये
प्रकाशक : हिन्दी बुक सेन्टर
4/5-बी, आसफ अली रोड
नई दिल्ली-110 002

काम-कथा
(परिवार कल्याण निबंधावली)
डॉ० भानुशंकर मेहता
प्रथम संस्करण : 2003
मूल्य : 85 रुपये
प्रकाशक : पिलग्रिम्स पब्लिशिंग
बी 27/98-ए-8, दुर्गाकुण्ड
वाराणसी-221 010

चमत्कारिक पौधे
उमेश पाण्डे
प्रथम संस्करण :
मूल्य : 30 रुपये
प्रकाशक :
भगवती पॉकेट बुक्स
11/7, डॉ० रांगेय राघव मार्ग
आगरा-2

विश्वविजय
(नाटक)
प्रो० रामजी उपाध्याय
प्रथम संस्करण : 2060 वि०सं०
मूल्य : 40 रुपये
प्रकाशक :
भारतीय संस्कृति-संस्थानम्
357 महामनापुरी, वाराणसी-5

स्वरूप सहस्त्रसई
(एक सहस्त्र दोहों का संग्रह)
कृष्णस्वरूप शर्मा 'मैथिलेन्द्र'
प्रथम संस्करण : 2001
मूल्य : 45 रुपये
प्रकाशक : शिव संकल्प
साहित्य परिषद्, हाउसिंग बोर्ड
कालोनी, होशंगाबाद-461 001

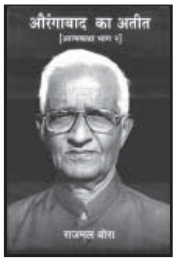

औरंगाबाद का अतीत
(आत्मकथा भाग)
राजमल बोरा
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : 350 रुपये
प्रकाशक : श्रीमती आशा बोरा
5, मनीषा नगर, केसरसिंहपुरा
औरंगाबाद-431 001

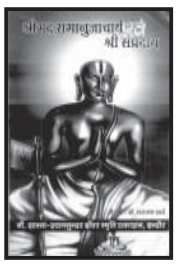

श्रीमद् रामानुजाचार्य एवं श्री सम्प्रदाय
डॉ० गजानन शर्मा
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : 20 रुपये
प्रकाशक : सौ. शान्ता -
श्यामसुन्दर झँवर स्मृति प्रकाशन
जे-92, एल.आई.जी. कालोनी, इन्दौर

श्री वल्लभाचार्य महाप्रभु और पृष्टिमार्ग
डॉ० गजानन शर्मा
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : 12 रुपये
प्रकाशक : सौ. शान्ता -
श्यामसुन्दर झँवर स्मृति प्रकाशन
जे-92, एल.आई.जी. कालोनी, इन्दौर

जीवन यात्रा के पड़ाव
(आत्मकथा भाग-1, 2)
राजमल बोरा
प्रथम संस्करण : 2003
मूल्य : 200 रुपये (प्रत्येक)
प्रकाशक : श्रीमती आशा बोरा
5, मनीषा नगर, केसरसिंहपुरा
औरंगाबाद-431 001

काश!
(काव्य-संग्रह)
डॉ० श्यामलाकान्त वर्मा
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : 125 रुपये
प्रकाशक :
संजय बुक सेन्टर
के० 38/6, गोलघर, वाराणसी

सार्थक कुछ
(कविता-संग्रह)
रमेशकुमार त्रिपाठी
प्रथम संस्करण : 2001
मूल्य : 100 रुपये
प्रकाशक :
उमेश प्रकाशन
100, लूकरगंज, इलाहाबाद-01

शाश्वत काव्य की आत्मा
(साहित्यिक निबन्ध)
डॉ० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी
प्रथम संस्करण : 2004
मूल्य : 150 रुपये
प्रकाशक : आशापति शास्त्री
वाग्योग-चेतनापीठम्, शिवाला
वाराणसी-221 001

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का प्रत्येक अंक गागर में सागर समाये हुए होता है। आठ पृष्ठों की पत्रिका में साहित्यिक गतिविधियों एवं शिक्षा सम्बन्धी अनेक सूचनाएँ एक स्थान पर मिल जाती हैं। सम्पादकीय में 'इतिहास की बदलती अवधारणाएँ' के अन्तर्गत जो बात कही है वह वास्तविकता से ओत-प्रोत है।

पत्रिका के दूसरे पृष्ठ पर सम्मान-पुरस्कार सम्बन्धी पूरी जानकारी मिली।

प्रत्येक राज्य की साहित्य अकादमी/हिन्दी अकादमी प्रतिवर्ष साहित्यकारों को पुरस्कृत करती है तथा उन्हें सम्मान के रूप में कुछ धन देकर इतिश्री कर लेती है। इससे न तो साहित्यकार का हित हो पाता है और न ही साहित्य का। ऐसे पुरस्कारों से जन-जन तक लेखकों की कृतियों तथा साहित्यकार के विषय में पाठकों तक जानकारी नहीं पहुँच पाती है। जिन कृतियों को या जिन साहित्यकारों को पुरस्कृत किया जाता है यदि उनकी कृतियों को पुरस्कार प्रदान करने वाली सरकार क्रय सूची में सम्मिलित कर पाठकों तक पहुँचा सकें तो इससे पुरस्कार की सार्थकता सिद्ध होगी। इससे पुरस्कारों की पारदर्शिता भी बनी रहेगी। प्रकाशक भी श्रेष्ठ साहित्य प्रकाशित करने के लिए उत्साहित होंगे।

— सुखपाल गुप्त
आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' के अगस्त 04 के अंक में 'नफरत के बीज बोती किताब' शीर्षक सम्पादकीय बड़ा प्रभावशाली एवं प्रासंगिक है। पाकिस्तानी पाठ्य-पुस्तकों के विषयमन की तरफ मोदीजी ने अच्छा ध्यानाकृष्ट किया है। अच्छे अग्र लेखों की परम्परा में एक और कड़ी उन्होंने जोड़ दी है। लेख के बाईं ओर की टिप्पणी भी न केवल रोचक अपितु ज्ञानवर्धक भी है। ''ज्ञानगंगा के प्रवाहक—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल पर सचित्र लेख'' पढ़कर आनन्द व श्रद्धा का अनुभव हुआ। उनकी जन्म शताब्दी के स्मरण का पुनीत कार्य मोदीजी ने किया है। वर्ना मनीषियों को आजकल भुलाने का का फैशन बन गया है। वस्तुत: लेख न केवल पठनीय अपितु मननीय, स्मरणीय व संग्रहणीय भी बन गया है।

— आचार्य डॉ० महेशचन्द्र शर्मा, भिलाई

इतिहास की बदलती अवधारणाएँ

जुलाई 2004 अंक में प्रकाशित सम्पादकीय पर

पाठकों की प्रतिक्रिया

'भारतीय वाङ्मय' में आपने इतिहास का जो मुद्दा उठाया है, वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। स्वतंत्रता के बाद इतिहास के साथ बहुत खिलवाड़ हुआ है। यह राजनीतिक नेताओं का खिलौना बन गया है। अपने वोट-बैंक को राजी रखने के लिए तोड़-मरोड़ कर सामने रखना, यह सिर्फ हिन्दुस्तान की विशेषता है। साथ ही बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ हासिल कर, मानसिक गुलाम बने इतिहासज्ञ लोगों की हास्यास्पद चेष्टा विचारणीय है।

अगर अन्य देशों में ऐसी चेष्टा की जाती तो भयंकर दंगे तक हो जाते। सलमान रसदी जैसे लोगों को सत्य बोलने पर मौत के घाट उतारने की धमकी मिली। जापान के राजनीतिज्ञ अगर वहाँ के पुराने सैनिक अधिकारियों की कब्र पर फूल चढ़ाने जाते हैं तो चीन और कोरिया में आक्रोश फैल जाता है, क्योंकि जापानी सेना ने इन दोनों देशों में भयंकर अत्याचार किया था और इसे वे किसी भी कारण भूलने को तैयार नहीं हैं। इतना होने पर भी आज के जापान से चीन आदि कोरिया के सम्बन्ध खराब नहीं है। इसी तरह इजराईल भी किसी भी तरीके से जर्मनी में लाखों यहूदियों को हिटलर द्वारा मारने के अत्याचार पर पर्दाफाश होने नहीं देता। अमेरिका और इंग्लैण्ड में भी आज अत्यन्त मधुर सम्बन्ध होने पर, पुराने इंग्लैण्ड के अत्याचार और स्वतंत्रता संग्राम को छिपाया नहीं जाता।

'इतिहास' का शाब्दिक अर्थ भी यही है—'इति ह आस'—यह इस तरह हुआ। इसलिये नव मानव संसाधन मंत्री कहते हैं ''मौलिक रूप से इतिहास कैसे बदला जा सकता है?'' तो वे ठीक ही कहते हैं। पर इसकी साँस में वे पलट कर पूछते हैं कि अगर मुसलमान, ईसाई आदि की शिकायतें उभर कर आयेगी, तो देश का क्या होगा? जवाब यही है कि सच्ची घटनाओं का खुलकर सामना करने से भला ही होगा, छिपाने से बुरा होगा।

चाहे यह कितना ही दावा किया जाए कि मानव संस्कृति का इतना बड़ा उत्थान हुआ है, पर तथ्य यह है कि मानव स्वभाव और मानसिकता (साइकोलॉजी) में एक रत्ती भी फर्क नहीं आया है। सम्पत्ति के बँटवारे में जो झगड़े भाई-भाई में रामायण-महाभारत काल में होते थे वे ही आज भी प्रत्येक परिवार में होते हैं। जो अत्याचार एक बलवान देश, दूसरे कमजोर देश पर करने आये हैं, वे ही कुछ सालों पहिले तक कम्यूनिजम के नाम पर रूस ने पूर्वी यूरोप व अन्य देशों में किये और अब अमेरिका एक के बाद एक कई देशों में कर रहा है—कोरिया, वियतनाम, लेबनान, लीबिया, पनामा, इराक, अफगानिस्तान इत्यादि। संयुक्तराष्ट्र आदि संस्थायें इसे किसी भी प्रकार से रोकने में असमर्थ हैं।

हजार साल की गुलामी के बाद देश के बँटवारे में करोड़ों लोगों की व्यथा और अपने पुस्तैनी गाँव-देश को छोड़कर पलायन को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इसके कारणों को छिपाना, देशद्रोह ही है। यह देशवासियों की कमजोरी है कि इतना सब होने के बाद भी वे इतिहास के साथ खिलवाड़ करने पर भी पूरे जोर से प्रतिकार करने को नहीं उठते। शायद उन्हें फिर 1000 साल की गुलामी की नौकरी करनी पड़ेगी। या फिर भारत की मूल संस्कृति को अब हमेशा के लिए वैसे ही नष्ट होना पड़ेगा, जैसे अमेरिका की 'रेड इण्डियन' सभ्यता को। तभी कहते हैं कि इतिहास की आवृत्ति होती रहती है।

—कृष्णकुमार सोमानी, मुम्बई

अगस्त 2004 के अंक में आपने पाकिस्तान में गलत तथ्यों की पढ़ाई से हुए नुकसान की बहुत सटीक चर्चा की है। शिक्षित वर्ग भी यदि कट्टरता और कठमुल्लेपन से ग्रस्त हो तो ऐसी शिक्षा के औचित्य पर पुनर्विचार आवश्यक है। भारत के सन्दर्भ में भी यह विचारणीय है कि शिक्षित समुदाय अनेक गलत धारणाओं के पोषण और प्रसार में संलग्न होता जा रहा है और समाज के विविध घटक वर्गों में धर्म, भाषा, क्षेत्र, जाति, लिंग ओर वर्ण के आधार पर नफरत फैल रही है। लगता है, हमारी 'किताब' भी कहीं गलत हो गई है।

—डॉ० ऋषभदेव शर्मा
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद

'भारतीय वाङ्मय' नियमित मिल रहा है। सच कहूँ गम्भीरता से कल पहली बार ही पढ़ा है इससे पहले सूचना-पत्र समझकर सरसरी नजर डालता रहा था। पढ़कर लगा कि न पढ़ने लायक तो मात्र वही स्थान है जहाँ मेरे पते का कागज चिपका है।

किताबें जलती रहीं से आरम्भ होकर श्री विष्णु प्रभाकर व रमेशचन्द्र शर्मा के पत्र तक लेकर सारी सामग्री न केवल पठनीय हैं अपितु रस से सराबोर करती है। बाल साहित्य की उपेक्षा वास्तव में कष्टदायक है।

अच्छी साहित्य सामग्री पर साधुवाद।

— डॉ० श्याम सखा 'श्याम', रोहतक

वंदेमारतम्

भारत सब कुछ है, जो वे सोचते हैं लेकिन इससे भी कुछ ज्यादा है। पर्वत, नदियाँ, वन, विशाल खेत, मैदान और आप सब हम सब आप भारतमाता के अंग हैं।

आप स्वयं भारतमाता है।

—पं० जवाहरलाल नेहरू
(डिस्कवरी ऑफ इण्डिया, पृष्ठ 61-62)

क्या आप भी यह करेंगे ?

स्कूल में पुस्तक-सप्ताह मनाया जा रहा था। पुस्तकालय की अच्छी तरह सफाई की गई थी। हर किताब की धूल-मिट्टी हटाई गई थी। स्कूल के नोटिस बोर्ड पर बच्चों के बनाए तरह-तरह के रंग-बिरंगे पोस्टर लगे थे, जिनमें पुस्तक-सप्ताह के महत्त्व को समझाया गया था। एक पोस्टर में पुस्तक को माँ की तरह बच्चे की उँगली पकड़े आगे ले जाते दिखाया गया था।

कई बच्चों ने पुस्तकालय के सामने वाले बरामदे में झंडियाँ लगा दी थीं। मेजों की लम्बी कतार बनाकर, उन पर एक से एक अच्छी कहानियों, कविताओं, विज्ञान, कम्प्यूटर आदि की पुस्तकें सजा दीं। उनमें बहुत-सी दुर्लभ पुस्तकें भी थीं। पुस्तक-सप्ताह के दौरान ही कहानी सुनाओ प्रतियोगिता भी हुई थी। वही बच्चा प्रथम आया था, जिसने पुस्तक को माँ के रूप में दिखाया था।

पुस्तक समीक्षा

शिव काशी

पौराणिक परिप्रेक्ष्य एवं वर्तमान सम्बन्ध

डॉ० प्रतिभा सिंह

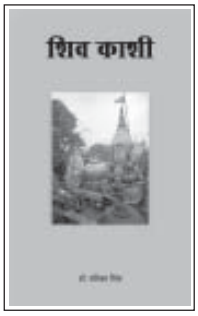

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-370-3
पृष्ठ : 300, 15 तालिकाएँ, 35 चित्र/मानचित्र, 32 फोटो तथा 5 परिशिष्ट
विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
मूल्य : 400.00 (सजि.)

विश्व के सभी धर्मों में तीर्थयात्रा का केन्द्रीय महत्त्व पाया जाता है जो नाना प्रकार के उद्देश्यों से की जाती है। चूँकि हिन्दू परम्परा में असंख्य देवी-देवताओं की मान्यता है और उनमें से अधिसंख्य किसी न किसी (पवित्र) स्थल से जुड़े हैं; अत: प्राचीन हिन्दू तीर्थयात्राओं का जाल सघन, संस्तरित, तथा अति-विस्तृत है। स्पष्ट है कि ऐसी परम्परा से सम्बन्धित साहित्य की रचना भी बहुत प्राचीन काल से होती रही होगी। प्राचीन ग्रन्थों में तीर्थों का उल्लेख और कहीं-कहीं उनके महात्म्य का वर्णन अवश्य मिलता है। परन्तु, विशुद्ध तीर्थ-साहित्य लेखन की परम्परा अपेक्षाकृत आधुनिक है। इन साहित्यों की शैली वर्णनात्मक रही है और उनमें तीर्थों पर सम्पादित किये जाने वाले कर्मकाण्डों पर भी यथेष्ठ प्रकाश डाला गया। तीर्थों के विश्लेषणात्मक व व्याख्यात्मक अध्ययनों/शोध-कार्यों का आरम्भ बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध की प्रवृत्ति रही। उत्तरोत्तर तीर्थ-यात्रा अध्ययन में वैविध्यतापूर्ण संवर्द्धन इतना हुआ है कि विद्वान इसे अध्ययन की एक अलग शाखा—'तीर्थ-विज्ञान' **(तीर्थोलॉजी)** की संज्ञा देते हैं। इस विशिष्ट शाखा का चारित्रिक स्वरूप अन्तर्विषयी है।

हिन्दू मान्यतानुसार आदि-त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु और महेश/शिव) द्वारा ही ब्रह्माण्ड के सतत् गतिशील चक्र का परिसंचालन होता है। इनमें से अन्तिम दोनों का सम्बन्ध काशी, जिसे वाराणसी नाम से भी सम्बोधित किया गया है, से है। विशेषत: शिवजी का काशी से इतना गहरा और भावनात्मक लगाव-जुड़ाव है कि शिव एवं काशी एक-दूसरे के अभाव में अधूरे ही नहीं वरन् परस्पर पर्यायवाची भी हैं। श्रद्धालुओं के लिए शिव के बिना काशी की कल्पना ही नहीं की जा सकती। हिन्दू तीर्थों में काशी के विशिष्ट महत्त्व और राष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में इस नगरी ने विविध विषयों—इतिहास, धर्म-शास्त्र, धर्म-अध्ययन, मानवशास्त्र/समाजशास्त्र, भूगोल, इंडोलॉजी, इण्डियन स्ट्डीज़ इत्यादि के अध्ययनकर्त्ताओं को देश-विदेश से अपनी ओर आकृष्ट किया है। सम्भवत: डॉ० प्रतिभा सिंह भी इसी आकर्षणवश प्रस्तुत शोधजन्य कृति की रचना के लिए प्रेरित हुई हैं।

शिव का काशी के साथ एकात्मक सम्बन्ध से परिचित सभी हैं; परन्तु, इस पक्ष पर शोधपरक अध्ययन अभी तक नहीं हुआ था। इस अभाव की पूर्ति की दृष्टि से शोध-प्रबन्ध आधारित प्रस्तुत पुस्तक अति महत्त्वपूर्ण है विशेषत: हिन्दी भाषा-भाषियों के सन्दर्भ में। उल्लेखनीय है कि डायना एक्क की प्रसिद्ध पुस्तक **बनारस : दि सिटी ऑफ़ लाईट** (1983) शोध-परक व लोकप्रिय विधा तथा शास्त्रीय व वर्तमान आधुनिक पद्धति के बीच एक सेतुबन्ध रचना के रूप में चर्चित हुई। इसी प्रकार की एक पुस्तक की आवश्यकता हिन्दी के पाठकों और काशी के विद्वान जन-मानस को भी एक लम्बे समय से रही है। डॉ० प्रतिभा सिंह का यह प्रयास इस दृष्टिकोण से सफल माना जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक कुल सात अध्यायों में संरचित है। प्रथम अध्याय में विषय तथा सन्दर्भ अवस्थापना किया गया है। इसके अन्तर्गत तीर्थों के अध्ययन के समकालीन आयाम पर प्रकाश डालते हुए साहित्य-समीक्षा का प्रयास है। इस प्रयास में प्रमुख कृत्तियों को ऐतिहासिक क्रमवार आलोकित करते हुए प्रस्तुत अध्ययन के औचित्य को स्पष्ट किया गया है। चूँकि यह पुस्तक इतिहास अभिकेन्द्रित है, लेखिका ने इसके लेखन में प्रयुक्त स्रोतों पर भी विधिवत् प्रकाश डाला है।

द्वितीय अध्याय का विषय शिव का ऐतिहासिक सन्दर्भ है। इस विमर्श का आरम्भ मिथकीय आधार पर चर्चा से आरम्भ होता है। तदुपरान्त शिव के चार ऐतिहासिक—प्राचीनतम, प्राचीन, मध्य, आधुनिक व समकालीन स्वरूपों की विशद् विवेचना की गयी है। यहाँ ध्यान देने योग्य है कि ऐसा करते हुए लेखिका ने काशी का मौलिक सन्दर्भ तिरोहित नहीं होने दिया है। अर्थात् शिव स्वरूप के उद्भव व विकास को उनके (काशी की) धरती पर स्थापित होने की प्रक्रिया के साथ-साथ समझने का प्रयास हुआ है।

इसी पक्ष को, अलग अध्याय 'भारत में शैव-स्थलों की परम्परा' के अन्तर्गत वृहद् स्तर पर स्पष्ट करने की चेष्टा है। इस क्रम में सर्वप्रथम ब्रह्माण्डीय परिप्रेक्ष्य में शैव-स्थलों की व्याख्या है। इस आयाम को स्पष्ट करने की दृष्टि से कई मॉडल तथा तालिका का उपयोग लेखिका ने किया है। इससे नि:सन्देह एक सामान्य पाठक/पाठिका को उक्त गूढ़ बिन्दु समझने में सरलता होगी। आगे काशी में शिव तथा उनसे सम्बन्धित स्थलों की प्रतिकात्मकता पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही शैव रूपों के समन्वयन एवं विशिष्टता, इत्यादि का भी विश्लेषण इस अध्याय में है।

चौथा अध्याय पूर्णतया 'काशी के धार्मिक भूगोल में शिव' विषय पर केन्द्रित है। इसमें काशी की ऐतिहासिक विकास यात्रा के आधार पर काशी-शिव सम्बन्ध को स्पष्ट करने का प्रयत्न हुआ है। इसके पश्चात् लेखिका ने काशी के धार्मिक भूगोल में शैव-स्थलों के अति महत्त्वपूर्ण स्थान, उनके प्रकार व महत्त्व, जैसे बिन्दुओं की मीमांसा प्रस्तुत किया है।

काशी देवालयों तथा भव्य गंगा-घाटों के सौन्दर्यपूर्ण प्रात:कालीन दृश्यावली मात्र के लिए नहीं जानी जाती है; वरन् यहाँ की यात्राओं की भी लोकप्रियता और प्रसिद्धि जन-मानस में आज तक जीवन्त है इसके गौरव-मुकुट में। अत: काशी की यात्राओं का वर्णन और उनमें विभिन्न शिव-रूपों की स्थिति का निरूपण सर्वथा न्यायसंगत एवं प्रासंगिक है। इस विषय को पुस्तक के पाँचवें अध्याय के रूप में रखा गया है। इसमें हिन्दू परम्परा में तीर्थयात्रा के उद्देश्य, आवश्यकता और महत्त्व की पृष्ठभूमि में काशी की समस्त महत्त्वपूर्ण यात्राओं का वर्णन शिव-सन्दर्भ में की गई है।

काशी में प्रत्येक दिन किसी न किसी पारम्परिक पर्व-त्योहार/उत्सव का अवसर होता है और इस नगरी के सांस्कृतिक व्यक्तित्व को यह तथ्य वैशिष्ट्यता प्रदान करता है। छठे अध्याय में जिस विषय को स्थान मिला है वह काशी के शिव-सम्बन्धित पर्व-त्योहार एवं पूजन-पद्धति है। इस अध्याय में काल तथा उसकी पवित्रता की हिन्दू अवधारणा सहित हिन्दू पंचांग पर भी प्रकाश डाला गया है।

सातवें तथा अन्तिम अध्याय में आध्यात्म/धार्मिक-आस्था, धरोहर और पर्यटन के बीच एक संभावित लाभप्रद आर्थिक सहसम्बन्ध की प्रस्तावना है। इस अध्याय में लेखिका ने सर्वप्रथम प्रचलित व्यावसायिक पर्यटन के गुण-दोषों को स्पष्टतया ऊँगलियों पर गिनवाया है। इसी पृष्ठभूमि में 'वैकल्पिक पर्यटन' की संकल्पना, तत्त्व, आवश्यकता और सम्भाव्यता पर तथ्यपरक विवरण प्रस्तुत है। उसके पश्चात् काशी में धरोहर आधारित पर्यटन में शैव-स्थलों के स्थान का विश्लेषण है। निश्चित तौर पर वर्तमान परिस्थितियों में हमें अपने धरोहरों और उनके परिवेश की संरक्षा में उन्हीं का बुद्धिमत्तापूर्वक उपयोग करना होगा। इस दिशा में प्रस्तुत अन्तिम अध्याय संकेतक के रूप में विचारार्थ स्वीकार किया जाना चाहिए।

आगे, उपरोक्त अध्यायों के निष्कर्षों का सारांश; प्रासंगिक तथ्यों/सूचनाओं को तालिकाबद्ध रूप में पाँच परिशिष्टों की योजना-रचना में प्रस्तुती; और कठिन परिश्रम से (68) अंग्रेजी ग्रन्थों, (82) अंग्रेजी शोध-पत्रों, (15) हिन्दी ग्रन्थों, (48) संस्कृत ग्रन्थों तथा एक मराठी ग्रन्थ को मिलाकर

कुल 214 रचनाओं के सन्दर्भ सूची संकलन पुस्तक की सारगर्भिता और उपादेयता को संवर्द्धित किया है। पुस्तक में सम्मिलित-समायोजित तालिकायें, चित्र/मानचित्र और फोटो सुधी पाठकों/पाठिकाओं में विषय की ग्राह्यता प्रक्रिया में सहयोगी हैं। विषय प्रस्तुतीकरण सीधा और भाषा सधी होने के बावजूद कहीं-कहीं, विषय की गूढ़ता या गम्भीरतावश, अभिव्यक्ति सरल रूप में प्रवाहित नहीं हुई है। जहाँ तक पुस्तक के उपयोगी होने का प्रश्न है यह काशी-प्रेमी हरेक स्तर—सामान्य जन से लेकर शोधार्थियों/शिक्षार्थियों व शिक्षकों को रुचेगी। साफ़-सुथरी छपाई और (प्राचीन) श्री विश्वनाथजी के स्वर्ण-शिखर दृश्यावली से सुसज्जित आवरण-पृष्ठ ने पुस्तक को चित्ताकर्षक स्वरूप दिया है। अन्तिम टिप्पणी के रूप में यह कहना सर्वथा उचित होगा कि यह पुस्तक पठनीय और संग्रहण योग्य है।

— प्रेमशंकर एस०

वटवृक्ष की छाया में

कुमुद नागर

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-346-0

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
मूल्य : 190.00

नाटक की दुनिया में अमृतलाल नागर

राजेन्द्र उपाध्याय

अमृतलाल नागर के दादा रंगकर्म और साहित्य की दुनिया से जुड़े थे। नागरजी के पिताजी पं० राजाराम नागर भी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे भी अच्छे अभिनेता थे। वे बैंकर थे, जबकि अमृतलाल नागर *मानवमन* के बैंकर थे। *एक दिल हज़ार अफसाने* की भूमिका में वे लिखते हैं—''मेरा अकेलापन एक ऐसा बैंक बन गया था जिसमें तरह-तरह की चाल-ढाल, बोलचाल के लहजे, मुहावरे, गलियाँ, असंख्य दृश्य और अनबूझी-सी अनुभूतियाँ, चेहरे और आवाज़ें जमा होती ही रहती थीं।''

कुमुद नागर ने पुस्तक में 'बा' यानी श्रीमती प्रतिभा नागर की भी अच्छी छवि बनाई है, जो वास्तव में अमृत प्रतिभा थी। यह अमृतलाल नागर की जीवनी तो है ही खुद लेखक कुमुद नागर के कई जीवन-प्रसंग इसमें आ गए हैं। विशेषकर *स्वप्नभंग, अपनी तलाश, दीवानेआम, दिल्ली, वटवृक्ष* आदि अध्याय खुद लेखक की आत्मकथा है। *कुछ न बन पाने का, वटवृक्ष की छाया में, घुट जाने का दुःख* बार-बार लेखक को मथता है। नागरजी ने अपने बेटे से गुजराती में कहा था—जो वटवृक्ष ना नीचे कोई बीजो पौधो कठिनाई ती ज पणछी पाये छे, इनूं ध्यान राखजे। (देखो वटवृक्ष के नीचे कोई दूसरा पौधा कठिनाई से ही पनप पाता है। इसका ध्यान रखना) लेखक बचपन से इस 'वटवृक्ष काम्प्लेक्स' से लड़ता रहा है। ''बाबूजी द्वारा कभी वटवृक्ष के नीचे लगने वाले पौधों का दृष्टांत सुन लेने के बाद मैं एक लम्बे समय से 'वटवृक्ष काम्प्लेक्स' से लड़ता रहा हूँ। अपने ख़ानदानी शहर में यह आसान नहीं था। मेरी हर प्रशंसा इस बात पर समाप्त होती थी—'आख़िर बेटा किस बाप का है।' मेरे पिता सुनकर प्रसन्न होते थे और मुझे ऐसा लगता था कि मेरा कद, मेरे काम से नहीं, बल्कि अमृतलाल नागर के नाम से ऊँचा हो रहा है।''

इस काम्प्लेक्स में प्रेमचंद के बेटे अमृतराय भी अक्सर ग्रस्त रहते थे, मैथिलीशरण गुप्त के अनुज सियारामशरण गुप्त भी और भी अनेक प्रतिभाएँ—लेकिन यह भी सच है कि वटवृक्ष की छाया में उठने-बैठने से ही, एक व्यापक साहित्यिक समाज से परिचित हुए और उनके संस्कार उन्हें मिले और उनकी प्रतिभा पल्लवित-पुष्पित हुई।

यह जीवनी एक औपन्यासिक प्रवाह में लिखी गई है, एक बड़े लेखक की जीवनी तो यह है ही, एक युवा लेखक का जीवन संघर्ष भी इसमें बोलता है। यह रेडियो और हिन्दी नाटक के विकास की कहानी भी है। —*रंग प्रसंग* (वर्ष 7, अंक 3) से

धन धन मातु गङ्ग

डॉ० भानुशंकर मेहता

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-376-2

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
मूल्य : 300.00

'धन-धन मातु गङ्ग' गंगा से सन्दर्भित एक श्रेष्ठकृति

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

'विश्वविद्यालय प्रकाशन', वाराणसी, हिन्दी की, अहर्निश उन्निद्र प्रकाशन-संस्थाओं में पांक्तेय ही नहीं, अग्रणी भी है। भिन्नरुचि पाठकों की मनोगत अभिरुचि को पकड़ने की जितनी क्षमता इस प्रकाशन-संस्थान को है, उतनी अन्यों की कदाचित ही होगी। यशोधन लेखक डॉ० भानुशंकर मेहता की नवप्रकाशित श्रेष्ठ कृति 'धन-धन मातु गङ्ग' इस प्रकाशन-संस्थान की उसी क्षमता का आक्षरिक साक्ष्य है। इसके लिए लेखक और प्रकाशक दोनों ही साधुवाद के योग्य हैं।

डॉ० मेहता भारतीय संस्कृति और साधना से सम्बद्ध विषयों के सुविज्ञ लेखक हैं। आज, गंगा पर लिखने वाले अनेक ऐसे भी होंगे, जिन्होंने न तो कभी गंगा में स्नान किया होगा और न उन्हें गंगा के दरस-परस की ही आकांक्षा हुई होगी। किन्तु डॉ० मेहता अंतरंग गंगाभक्त हैं, इसलिए उनके द्वारा प्रस्तुत गंगाविषयक विविध आस्वादवाली सामग्री जितनी विश्वसनीय है, उतनी प्रामाणिक भी।

प्रकाशन-जगत के शिखरपुरुष श्री पुरुषोत्तमदास मोदी की इस पुस्तक में अंकित प्रकाशकीय अभ्युक्ति की मैं अपने शब्दों में पुनरावृत्ति करता हूँ कि इस कृति के बनारसी लेखक डॉ० मेहता वैज्ञानिक और पर्यावरणविद् हैं, साथ ही पारिस्थितिकी और जनस्वास्थ्य के भी विज्ञाता हैं। यह गंगा-प्रदूषण की चर्चा के आरम्भकाल से ही गंगा से जुड़े हुए हैं। इनकी, एतद्विषयक वर्षों के श्रम से संकलित गंगा-सम्बन्धी शोधगर्भ सामग्री पुस्तकाकार में परिणत हुई है, इसीलिये इनकी यह कृति आज अधिक प्रासंगिक है।

कलिमलहारिणी गंगा के वर्णन से तो समग्र भारतीय वाङ्मय भरा पड़ा है, किन्तु डॉ० मेहता ने सरल भाषा और रोचक शैली में लिखित इस कृति में 'जल-प्रदूषण और जलवाहित रोग', 'गंगाजल-प्रदूषण' आदि प्रासंगिक प्रकरणों के विनियोग द्वारा प्रदूषित गंगाजल के प्रति अन्धभक्ति और अन्धविश्वास से ग्रस्त जनजीवन की चेतना को जागरित करने का जो आक्षरिक प्रयत्न किया है, वह अतिशय श्लाघ्य है। इसके लिए सर्वसाधारण जनता डॉ० मेहता का बहुत उपकार मानेगी।

डॉ० मेहता की इस कृति से काशीतलवाहिनी गंगा की बहुमुखी महिमा पर केन्द्रित शोध-साहित्येतिहास के विस्तार का निर्माण हुआ है। गंगा से सन्दर्भित अनेक ऐसी सचित्र सामग्री इस कृति में समावेशित है, जो गंगा के विषय में गहन अध्येताओं के लिए भी प्राय: अज्ञात और अनास्वादित ही होगी। अवश्य ही, प्रज्ञाप्रौढ़ लेखक डॉ० मेहता ने गंगा के सम्बन्ध में वह सब सोचा है, जिसे आज तक किसी ने कदाचित् ही सोचा हो। डॉ० मेहता का गंगाविषयक चिन्तन निश्चय ही मौलिक और विस्मयकारक है।

नव्य चिन्तन से संवलित प्रत्येक प्रकरण बहुश्रुत लेखक डॉ० मेहता की सूक्ष्म निरीक्षण-शक्ति और चिन्तन की विश्वसनीय अभिव्यक्ति-कला की सूचना देता है। 'धन-धन मातु गङ्ग' (इस प्रकरण-शीर्ष पर पुस्तक संज्ञित हुई है), 'गंगा : कला और साहित्य में', 'गंगा-महिमा : राष्ट्रीय एकीकरण के सन्दर्भ में', 'पावन नदी और फुल्टन' आदि प्रकरणों में पदे-पदे डॉ० मेहता की चिन्तन-नव्यता मुखरित है। आमन्त्रित आलेखों को पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट में रखना मौजूँ होता। और फिर, अंगरेजी-आलेखों के हिन्दी रूपान्तर का ही समावेश अधिक उचित होता। इसके लिए लेखक को अनुवाद का अतिरिक्त श्रम भले ही करना पड़ता। कृति के अन्त में गंगा से सन्दर्भित ग्रन्थों और आलेखों की विवरणी की समायोजना से इसकी शोधोपादेयता में ततोऽधिक वृद्धि हुई है। कुल मिलाकर, यह एक ऐसा सन्दर्भ-ग्रन्थ बन गया है, जिससे गंगा पर शोधालोचन करनेवालों को मूल्यवान् उपजीव्य सुलभ होगा। सबसे अन्त में, इस बात की खिन्नता से मैं अपने को नहीं बचा पा रहा हूँ कि सुरभारती की राजधानी वाराणसी में छपनेवाली इस पुस्तक के संस्कृत-सन्दर्भ प्रदूषणमुक्त नहीं रह पाये हैं।

हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना संदर्भ

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-380-0

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

मूल्य : 200.00

हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना संदर्भ समय-समय पर लिखे गए निबन्धों का संग्रह अवश्य है पर उनमें एकान्विति है। ये निबन्ध हिन्दी की जातीय प्रकृति को किसी न किसी रूप में व्यक्त करते हैं। इसमें विकास व्यक्त करने के लिए एक ऐतिहासिक अनुक्रम भी है। पूर्व-भारतेन्दु से लेकर नए कवियों और कथा-लेखिकाओं के गद्य के रूपरंग और प्रकृति का आभास कराने का उपक्रम प्रशंसनीय है। निश्चय ही इससे पाठकगण लाभान्वित होंगे। **—डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी**

हिन्दी पत्रकारिता
भारतेन्दु-पूर्व से छायावादोत्तर काल तक

डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह

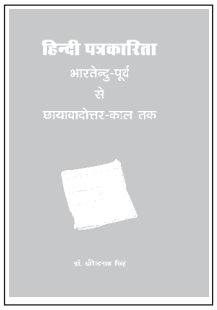

प्रथम संस्करण : 2003
ISBN : 81-7124-354-1

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 100.00

इस पुस्तक में डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह ने हिन्दी पत्रकारिता के लगभग सवा सौ साल की लम्बी यात्रा जो प्रेमचंद-पूर्व प्रकाशित 'उदन्त मार्तण्ड' (30 मई, 1826) से शुरू हुई थी को लेकर छायावादोत्तर-काल में अज्ञेय द्वारा दिल्ली से सम्पादित 'प्रतीक' (जून, 1947) तक प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया हैं। पुस्तक छोटी है लेकिन इसका फलक बड़ा है।

इस पुस्तक की यह विशेषता है कि कालक्रम से हिन्दी पत्रकारिता के उद्‌भव और विकास को ध्यान में रखकर उस युग की प्रवृत्तियों का आकलन किया गया है। लेखक ने परिश्रमपूर्वक न केवल पत्रिकाओं के प्रकाशन काल के बारे में सूचनाएँ इकट्ठी की हैं, बल्कि इनकी प्रामाणिकता पर भी ध्यान दिया है। लेकिन सजग लेखक के ध्यान से पता नहीं कैसे कुछ महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं—'अल्मोड़ा अखबार', 'उच्छृंखल' (सं० अमृतलाल नागर, लखनऊ), 'रूपाभ' (सं० सुमित्रानन्दन पंत, 1938), 'कल्पना' (1949, हैदराबाद) का उल्लेख छूट गया है। फिर भी सामान्य पाठकों के लिए ही नहीं, शोधार्थियों के लिए भी यह पुस्तक उपयोगी है। **—साधना अग्रवाल**

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'

सं० पुरुषोत्तमदास मोदी

प्रथम संस्करण : 2001
ISBN : 81-7124-289-8

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 150.00

जयशंकर 'प्रसाद' छायावाद युग के महान कवि थे। वे बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपने नाटकों, निबन्धों, कहानियों और कविताओं के माध्यम से भारतीय-संस्कृति को उजागर किया है और हिन्दी-साहित्य भण्डार को परिपुष्ट किया है। उन्होंने मौन साहित्य सर्जना की। वे किसी भी समारोह-सम्मेलनों से दूर रहते थे। इस कारण उनके व्यक्तिगत जीवन पर प्रकाश नहीं पड़ता। यह सौभाग्य की बात है कि उनके समकालीन साहित्यकारों में पण्डित सीताराम चतुर्वेदी, प्रसादजी के अंतरंग मित्र डॉ० राजेन्द्रनारायण शर्मा और मैत्रेयी सिंह प्रभृति के पास उनके अनेक संस्मरण हैं, जिनका संकलन इस ग्रन्थ में किया गया है।

इस ग्रन्थ में प्रसादजी के जीवन पर प्रकाश डालने वाले संस्मरणों का संकलन किया गया है, जिससे उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश पड़े। प्रसादजी के जीवन के प्राय: विभिन्न पक्षों पर उनके समकालिक मित्र रायकृष्णदास, विनोदशंकर व्यास, शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी, रामनाथ सुमन, केशवप्रसाद मिश्र, महादेवी वर्मा, नन्ददुलारे वाजपेयी, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज', अमृतलाल नागर प्रभृति के दुर्लभ संस्मरण से नयी जानकारी मिलती है। इस संकलन में ऐसे भी संस्मरण हैं जिनसे अनछुये पक्षों पर प्रकाश पड़ता है। इस छोटी-सी पुस्तक में संकलित रचनाओं से प्रसादजी के जीवन पर समग्र रूप से नयी जानकारी प्राप्त होती है। सम्पादक श्री पुरुषोत्तमदास मोदी ने इन संस्मरणों का संकलन-सम्पादन कर प्रसाद साहित्य को समझने में नयी दिशा दी है।— 'रवीन्द्र ज्योति'

प्राचीन भारत में यक्ष पूजा

डॉ० कमलेश दूबे

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-366-5

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

मूल्य : 250.00

प्राचीन भारतीय धर्म और कला में लोकजीवन को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है। विभिन्न धार्मिक आस्थाओं में जहाँ एक ओर मुख्य देवों को मान्यता मिली, वहीं दूसरी ओर उन अधिदेवों को भी मान्यता मिली जो धर्म के लौकिक पक्ष से जुड़े थे। ऐसे ही देवताओं में एक यक्ष है।

यक्ष-पूजा लोकधर्म में निरन्तर दिखाई देती है। किन्तु यक्ष-प्रतिमाओं या पूजा-पद्धति का काल-क्रमानुसार समुचित अध्ययन एवं व्याख्या बहुत कम हो पाई है। यह पुस्तक उत्तर भारत के इस लोक पक्ष पर सशक्त शोध है।

पुस्तक के प्रारम्भ में भारत में मूर्ति पूजा की उत्पत्ति, विकास और स्थान पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। तदुपरान्त यक्ष-पूजा और उनकी मूर्तियों को इतिहास-क्रम के अनुसार रखने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक प्रतिमा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उनके स्वरूप, मुद्राएँ, आभूषण पर विश्लेषण व तुलनात्मक विवेचन इस पुस्तक की विशेषता है। **—नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद से**

प्राचीन भारतीय पुरातत्त्व, अभिलेख एवं मुद्राएँ

डॉ० नीहारिका

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-389-4

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

मूल्य : 250.00 छात्र संस्करण : 150.00

यह पुस्तक अपने नाम के अनुरूप इतिहास के तीन आधार स्तम्भों को अपने कलेवर में समेटे है। इतिहास की पुनर्रचना एवं लेखन में पुरातत्त्व के साथ ही अभिलेखों और मुद्राओं का महत्त्व सर्वविदित है। इन तीनों विधाओं का समग्र रूप इस पुस्तक में सम्मिलित है। पुरातत्त्व का योगदान विश्व परिदृश्य पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और भारत में भी इसका महत्त्व असंदिग्ध है। अभिलेखों और सिक्कों का महत्त्व इस सन्दर्भ में अकथनीय है। महान सम्राट अशोक के विचारों, कार्यों और उसकी महान उपलब्धियों पर अभिलेखों द्वारा जो प्रकाश पड़ता है, वह अन्य किसी भी साधन द्वारा सम्भव नहीं है। आहत एवं ढलुआं सिक्कों से प्राप्त अनेकानेक राजाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने का एकमात्र साधन सिक्के ही हैं। किन्तु यह इतिहास के विद्यार्थियों का दुर्भाग्य ही है कि इन विषयों पर हिन्दी भाषा में स्तरीय ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं। यह उनकी अध्ययन एवं जिज्ञासा-पिपासा की तुष्टि के लिए विकट बाधा है। पुरातत्त्व सम्बन्धी अधिकांश ग्रन्थ आंग्ल भाषा में होने के साथ ही विभिन्न उत्खनित स्थलों की रपट के रूप में प्राप्त होते हैं। स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थी के लिए एक-एक उत्खनित स्थल की रपट पढ़ पाना एवं उसको आत्मसात कर पाना प्राय: सम्भव नहीं हो पाता। अभिलेखों और सिक्कों पर भी पुस्तकें बहुत सीमित हैं। पुरातत्त्व, अभिलेख एवं सिक्के ये तीनों एक साथ समग्र रूप से एक ही पुस्तक में नहीं सुलभ हो पाते हैं। लेखिका डॉ० नीहारिका ने इस अभाव की पूर्ति के लिए अत्यन्त श्रम व सावधानीपूर्वक इस पुस्तक की रचना की है। यह पुस्तक लेखिका के गहन अध्ययन, अध्यवसाय, सूझ-बूझ, लेखन-क्षमता का परिचायक है। पूरे विषय को बोधगम्य बनाने के लिए छायाचित्रों व रेखाचित्रों का भी प्रतुल समायोजन किया गया है।

यह पुस्तक विद्यार्थियों के साथ ही सुधिजनों के लिए भी उपयोगी होगी और सामान्यजनों का ज्ञानवर्धन करेगी।

पुस्तक प्राप्ति

काश (कविता-संग्रह)

लेखक : श्यामलाकान्त वर्मा

प्रकाशक : संजय बुक सेन्टर, गोलघर, वाराणसी

पृष्ठ - 72, मूल्य 125 रुपये।

कवि की धारणा है कि आज समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, लूटपाट और हिंसा से संत्रस्त सामान्य व्यक्ति मुक्ति के लिए आतुर है वह सोचता है—काश! यह दु:स्थिति बदल पाती। कवि की इसी अवधारणा की अभिव्यक्ति प्रस्तुत कविता-संग्रह है। संग्रह की हर कविता जीवन को सुरम्य प्रशस्त मार्ग पर चलने को प्रेरणा देती है। श्यामलाकान्तजी ने विभिन्न आयुवर्ग के लिए विविध विधाओं में सार्थक रचनाएँ की हैं। वे केवल कवि ही नहीं, समीक्षक, निबन्धकार, कहानीकार, नाटककार और बाल-साहित्य के रचनाकार भी हैं। पुस्तक पठनीय है। **—पानासि**

मड़ई

(लोक रेखांगन का वार्षिक अंक)

सम्पादक और प्रकाशक

डॉ० कालीचरण यादव

संयोजक : रावतनाथ महोत्सव समिति, विलासपुर (छत्तीसगढ़), पिन-495 001

पाँच वर्षों से प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली 'मड़ई' लोकजीवन में प्रचलित और प्रसारित संस्कारजन्य परम्पराओं का जीवन्त दस्तावेज है। 236 पृष्ठों के क्राउन अठपेजी में प्रकाशित हर आलेख विचारप्रधान और पठनीय है। छत्तीसगढ़ में विलुप्त हो रही लोक-संस्कारों से संबद्ध कलाओं का मूल्यांकन विचारोत्तेजक है। सम्पादक-प्रकाशक श्रमसाध्य सत्प्रयास के लिए बधाई के पात्र हैं। अंक संग्रहणीय है। **—पानासि**

उज्जयिनी का सिंहस्थ महात्म्य

लेखक : अनिल गुप्ता 'अनिल'

प्रकाशक : महाकाल भ्रमण प्रकाशन, 8 कोतवाली रोड, उज्जैन (म०प्र०), मूल्य : 30 रुपये

उज्जैन में कुछ महीने पहले सिंहस्थ महाकुम्भ लगा था। उस अवसर पर यह पुस्तक प्रकाशित हुई। इसमें उज्जैन की भौगोलिक स्थिति, कालखण्डों में उज्जैन के विभिन्न नाम, प्राचीन इतिहास, दर्शनीय ऐतिहासिक स्थल, क्षिप्रा नदी तथा अन्य जलस्रोत और धार्मिक महत्त्व से जुड़े महापर्व एवं यात्राओं के महात्म्य तीर्थयात्रियों के लिए आवश्यक है। उज्जैन जिसे अवन्ती भी कहा जाता है, विक्रमादित्य और उनके नवरत्न के लिए प्रसिद्ध है। भतृहरि का भी यह साधना-स्थल रहा है। लीलावतार श्रीकृष्ण और सुदामा ने यहीं गुरु संदीपन से शिक्षा ग्रहण की थी। पर्यटकों के लिए पुस्तक अधिक उपयोगी है। 128 पृष्ठों में उज्जैन की सारी जानकारियाँ दी गयी हैं। **—पानासि**

सार्थक कुछ (कविता-संग्रह)

लेखक : रमेशकुमार त्रिपाठी

प्रकाशक : उमेश प्रकाशन, इलाहाबाद; मूल्य 100 रु०

हाइकू कविता के विशेषज्ञ कवि, दर्शनशास्त्र के अध्येता रमेशकुमार त्रिपाठी की कविताओं का यह नवीनतम संग्रह है। इस संग्रह में कवि ने अपनी संवेदना की अभिव्यक्ति के लिए कुछ बड़े फलक का चयन किया है। इनमें दृश्यों और अनुभूतियों की सृजनात्मक झलकियाँ हैं, इनका स्वरूप क्षणिकाओं का है। क्षण-क्षण बदलता परिवेश और उन पर उसका प्रभाव इन रचनाओं की विशेषता है।

हे अमलतास!/पीले/गुच्छेदार/सुन्दर फूलों से/सजने के पहले/हो गये हो तुम/कड़ी धूप में/एकदम नंगे।

शाश्वत काव्य की आत्मा

लेखक : डॉ० वागीश शास्त्री

प्रकाशक : वाग्योग-चेतनापीठम्, शिवाला, वाराणसी, मूल्य : 150 रुपये

डॉ० वागीश शास्त्री प्राचीन संस्कृत साहित्य के आधुनिक भाष्यकार नहीं रचनाधर्मी साहित्यकार हैं, ललित निबन्धकार हैं। 'शाश्वत काव्य की आत्मा' आपके विविध विषयी 19 निबन्धों का संग्रह है। 'शाश्वत काव्य की आत्मा' संग्रह का प्रथम निबन्ध है, इसका मुख्य विषय है—मन को तरंगित करने वाली शक्ति ही काव्य की वह आत्मा है, जो उसे शाश्वतिक मूल्य प्रदान करती है। 'संस्कृत साहित्य में तकिया कलाम' संस्कृत की व्यंग्यात्मक शैली पर रोचक निबन्ध है। संस्कृत साहित्य के विविध सन्दर्भगर्भित निबन्ध लेखक की अध्ययनशीलता, मनन और रसमय दृष्टि की परिचायक है। विषय, भाषा, शैली सभी दृष्टियों से यह संग्रह पठनीय है।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 5 **सितम्बर 2004** **अंक : 9**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 40.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी

द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com

Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

✆ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082